अजय कुमार उत्तम
मंत्र·तंत्र·यंत्र विज्ञान
सत्यम् शिवम् सुन्दरम्
नव०-९१

उपहार केवल आपके लिए !

दीपावली के पावन पर्व की शुभकामनाएं समस्त पत्रिका परिवार कार्यालय के बन्धुओं की ओर से आप ग्रहण करें, आप भी इस परिवार के एक अभिन्न अंग हैं और जो स्नेह, भक्ति एवं साधना का सागर हमारे इस परिवार में हिलोरें ले रहा है, उसमें आपका भी योगदान पूरा-पूरा है ।

दीपावली के शुभ अवसर पर और नव वर्ष के प्रारम्भ में उपहार प्राप्त करना तो आपका अधिकार है, और यह अधिकार आपको पत्रिका सदस्य होने के नाते, पूज्य गुरुदेव के शिष्य होने के नाते अपने आप ही प्राप्त हो गया है, और इस अधिकार के अन्तर्गत यदि कोई शिष्य गुरुदेव से कुछ मांगता है, तो इसमें कोई ऐसी बात नहीं है, शिष्य का तो कार्य ही गुरु से प्रारम्भ होता है, और गुरु पर ही पूर्ण होता है, वह जो कुछ करता है, गुरु आज्ञा से ही करता है, इसमें कोई संदेह नहीं है ।

उपहार साधक-शिष्य हेतु

अपने शिष्य के लिए क्या आवश्यक है और उसे क्या देना है, इसका निर्णय गुरुदेव स्वयं करते हैं, इस बार शिष्यों की ओर से कुछ विशेष मांग आई, अनुरोध पत्र प्राप्त हुए, और यह लिखते हुए हार्दिक प्रसन्नता है, कि पूज्य गुरुदेव ने अपने शिष्यों का यह अनुरोध स्वीकार कर लिया है ।

संभवतः आपको निश्चय ही जिज्ञासा हो रही होगी, कि ऐसा विशिष्ट उपहार क्या है ?

यह उपहार शिष्यों ने अपने लिए मांगा है, आत्म उन्नति के लिए प्राप्त करना चाहा है, अलग-अलग शिष्यों की अलग-अलग मांग आई है, और उसी रूप में इसे स्वीकार किया गया है ।

पत्रिका में समय-समय पर दी जाने वाली उपहार योजना निश्चित समय के लिए होती है, लेकिन अब यह समय सीमा तोड़ दी गई है ।

उपहार क्या ?

अपनी उन्नति का सर्वश्रेष्ठ मार्ग साधना ही है, और यदि कोई वस्तु शिष्य को स्वयं अपने गुरुदेव से प्राप्त हो, तो बात अनोखी हो जाती है, पत्रिका के पिछले दो-तीन वर्षों में जो विशेष उपहार समय-समय पर दिये गये, उनमें जो प्रमुख हैं, उनकी सूची नीचे दी गई है, और इनमें से कोई भी एक विशिष्ट यन्त्र आप निःशुल्क उपहार स्वरूप प्राप्त कर सकते हैं —

- ★ **कुबेर पात्र**
- ★ **उर्वशी यन्त्र**
- ★ **मनोवांछित कामना सिद्धि महायन्त्र**
- ★ **चित्रक महालक्ष्मी यन्त्र**
- ★ **त्रैलोक्य सम्पदा वर वरद यन्त्र**
- ★ **सिद्धि पुरुष यन्त्र**

वर्ष–११

अंक–११

नवम्बर-१९९१

* * * * * * * * * * * *

। सम्पर्क ।

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग,

हाईकोर्ट कालोनी,

जोधपुर–३४२००१ (राज०)

टेलीफोन । ३२२०९

आनो भद्राः क्रतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोम्मुखी उन्नति प्रगति और

भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

।। ॐ चत्वारित्वा यहिर्नेवदे वद वदं सहितर्वै क्षरणत्वं सहः ।।

हे गुरुदेव ! आप कुछ ऐसा प्रदान करें कि मैं निरन्तर आपके सम्पर्क में रह सकूं, आपको देख सकूं, आपका पथ प्रदर्शन पा सकूं।

फिर साधना के घुंघरू छनक उठे

पिछले कुछ समय से पूरे भारतवर्ष और विदेशों में साधना के प्रति एक नई चेतना, एक नई उमंग, एक नया जोश पैदा हुआ है, और इस सम्बन्ध में जो नित्य सूचनाएं समाचार और टेलीफोन प्राप्त हो रहे हैं, वे अपने आप में आश्चर्यचकित कर देने वाले हैं, कि प्रत्येक शिष्य, प्रत्येक साधक गुरुदेव से जुड़ जाना चाहते हैं, आत्मसात हो जाना चाहते हैं।

नित्य सैकड़ों प्रश्न और पत्र प्राप्त होते हैं, प्रयत्न यही रहता है, कि यथासंभव सभी के जवाब दिये जांय, और दे भी रहे हैं, कुछ पत्रों को आगे के पन्नों पर बांध रहा हूं—

आप जैसा ही .....

प्रश्न—गुरुदेव ! मैं आप जैसा ही बनना चाहता हूं, साधना में आप जैसी ऊंचाई प्राप्त करना चाहता हूं, यह कैसे संभव है ? यह कब संभव है ?

उत्तर—भूल कर भी मेरी तरह बनने की कोशिश मत करना, मेरी तरह ऊंचाई प्राप्त करने का प्रयत्न भी मत करना, क्योंकि तुम स्वयं अपने आपमें एक विशेष रचना हो, जो बहुत तेजी से दौड़ता है, वह गिर जाता है, इसलिए मेरा उद्देश्य तुम्हें अपने समान या अपनी जैसी ऊंचाई पर पहुंचाना नहीं है, अपितु तुम्हारे व्यक्तित्व का विकास कर देना है, तुम्हारे अन्दर जो कुछ है, उसे समाज के सामने स्पष्ट कर देना है।

एक साथ लाखों-करोड़ों साधनाएं तुम कर भी नहीं पाओगे और न इतना कष्ट उठा पाओगे जितना मैंने उठाया है, और यह भी संभव है कि उस दिव्य अंश को, उन पूर्ण कलाओं को शायद तुम प्राप्त न भी कर पाओ, परन्तु चलना और विशिष्ट साधनाओं में विशिष्टता प्राप्त कर लेना तुम्हारा लक्ष्य है, और मैं तुम्हारा निर्माण इसी दृष्टि से कर रहा हूं, तन्त्र के क्षेत्र में, रसायन के क्षेत्र में, मन्त्र के क्षेत्र में, आयुर्वेद और कर्मकाण्ड के क्षेत्र में, ज्योतिष और दर्शन के क्षेत्र में, विशेष प्रकार के दीपक, विशेष प्रकार की ज्योति इस पृथ्वी पर जलाने की तैयारी कर रहा हूं, और तुम निरन्तर इसी तरफ बढ़ रहे हो।

तुम्हें करना कुछ नहीं है, तुम्हें केवल जुड़ना है, तुम्हें केवल अपने आपको मिटा कर मुझ में एकाकार हो जाना है, जब तुम अपने आपको विस्मृत कर लोगे, तो मेरी दिव्य आभा से अपने आप चमत्कृत हो उठोगे, और उतनी रोशनी भी पूरी पृथ्वी का अन्धकार दूर करने के लिए पर्याप्त होगी।

दो शब्द हैं, अनुकरण और अनुसरण। तुम गुरु का **अनुकरण** करने की कोशिश मत करो, **अनुसरण** का तात्पर्य है, गुरु को समझना, इस मानव शरीर में छिपे हुए उस दिव्य अंश को पहिचानना, गुरु चेतना से अपने आपको भिगो देना, गुरु के चिन्तन के अनुरूप बन जाना, और गुरु की समझ को पहिचान लेना, और यदि इतना ही कर लोगे तब भी तुम्हारा व्यक्तित्व इतना अधिक ऊंचा उठ जायेगा, कि लाखों-करोड़ों लोग तुम्हें देख कर, तुम्हारा स्पर्श पा कर धन्य हो उठेंगे।

आपकी आवाज चाहिए

प्रश्न—गुरुदेव जब आप बोलते हैं, तो अमृत बरसने लगता है, जब आपके प्रवचन सुनते हैं तो उस रस में, उस आनन्द में मग्न हो जाना चाहते हैं, पर वर्तमान गृहस्थ में, जीवन की समस्याओं में यह नियमित रूप से कैसे संभव है?

उत्तर—तिब्बत में एक विशेष साधना है, कि गुरु को निरन्तर अपने पास अनुभव करो, हर क्षण ऐसा महसूस करो, कि गुरु तुम्हारे पास बैठे हैं, उठ रहे हैं, सो रहे हैं, तुम उन्हें खाना खिला रहे हो, और वे खा रहे हैं, और फिर आंख बन्द कर गुरु के बिम्ब को अपने सामने ला कर बैठ जाओ, और तुम देखोगे कि गुरु का प्रवचन निरन्तर चल रहा है, और तुम सुन रहे हो।

इस प्रकार की साधना की स्थिति लाने के लिए निरन्तर गुरु की आवाज कुछ समय तक कानों के रास्ते मन तक पहुंचनी आवश्यक है, और इसका उपाय मेरे विभिन्न प्रवचनों के टेप हैं, कैसेट हैं, जिसे आप बजाते रहिए, निरन्तर उन शब्दों के माध्यम से अपने चित्त पर गुरु को अंकित करते रहिए।

इसके लिए तुम्हारे पास विभिन्न प्रकार के कैसेटों का खजाना होना चाहिए, जब एक कैसेट से ऊब भी जाओ तो दूसरी लगा दो, इससे एक नयी साधना, एक नयी चेतना बन सकेगी, टेप रिकार्डर से, कार में स्टीरियो में, और जब भी मौका मिले आप इन टेपों को, इन कैसेटों को बजाते रहिए, आप देखेंगे कि एक विशेष साधना, एक अद्वितीय साधना सम्पन्न होने जा रही है, और फिर कुछ समय बाद इन कैसेटों की जरूरत आपको नहीं पड़ेगी, फिर आपके प्राणों के बेतार के तार अपने आप मेरे प्राणों से जुड़ जाएंगे, फिर मैं कहूंगा और तुम सुनते रहोगे, फिर मैं साधना का रास्ता बताता रहूंगा, और तुम उस पर चलते रहोगे, फिर मैं हर क्षण अपने आप तुम्हारे साथ बना रहूंगा, तुम्हारा पथप्रदर्शक बना रहूंगा, और गारण्टी के साथ तुम्हें उस ऊंचाई पर पहुंचा दूंगा, जो अपने आपमें अलौकिक, अद्वितीय, दुर्लभ और तिब्बती साधना का आधार है।

प्रेम ही प्राण आधार

प्रश्न—पूज्य गुरुदेव! आप साधना के साथ प्रेम का संदेश भी देते रहते हैं, जब कि साधना में अनुशासन और कठोरता आवश्यक होती है, फिर इन दोनों का परस्पर सम्बन्ध कैसे बन सकता है?

उत्तर—ठूंठ से छाया प्राप्त नहीं हो सकती, उसके लिए घना होना आवश्यक है, उसके लिए झुकना आवश्यक है, और यह छायादार होने की क्रिया, मधुर होने की क्रिया प्रेम के द्वारा ही सम्भव है।

तुम में कमी यही है, कि तुम्हें प्रेम करना नहीं आता, तुम प्रेम भी भय और संकोच के साथ करते हो, घबराते हुए करते हो, हिचकिचाते हुए करते हो, ऐसा प्रेम—प्रेम हो ही नहीं सकता, प्रेम के लिए तो अपने आपको कुर्बान कर देना पड़ता है, मिटा देना पड़ता है, समाज कुछ भी नहीं कर सकता, कुछ भी नहीं कह सकता, तुम समाज को लात मारोगे, तो समाज अपने आप तुम्हारे पावों में झुकेगा।

और फिर प्रेम भी तो एक साधना है, एक तपस्या है, अपने आपको समर्पित कर देना ही जीवन की ऊंचाई है, प्रेम के द्वारा ही उससे आत्मसात हो जाने की क्रिया हो जाती है, उसके तन से रगड़ खाकर शरीर पवित्र और दिव्य बन जाता है, आंखों में चमक आ जाती है, मन में जगमगाहट पैदा हो जाती है, और ऐसा होते ही अन्दर का ब्रह्माण्ड, अन्दर की चेतना, अन्दर की प्रज्ञा अपने आप खुल जाती है, यह साधना की अपने आपमें अद्वितीय स्थिति है, जो साधक के बस की बात नहीं है, प्रेम तो जीवन की सम्पदा है, जीवन की धरोहर है, और जीवन को साधना पथ पर, ऊंचाई पर पहुंचा देने की क्रिया है।

प्रभु तुम पारस हम पाथर

प्रश्न—गुरुदेव! जब आपको देखते हैं, तो ऐसा लगता है कि जैसे कृष्ण ने वापिस जन्म लिया हो, वही मुस्कराहट, वही प्रेम की भावना, वही छलछलाता हुआ प्रवाह, पर

कभी-कभी मन शंकित भी हो उठता है, मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि आपको कैसे समझूं ?

उत्तर—तुम मुझे समझने की कोशिश भी मत करो, क्योंकि इन चर्म चक्षुओं से मुझे पहिचानना संभव भी नहीं है, इसके लिए अर्जुन जैसे **दिव्य चक्षु** होने आवश्यक हैं, इसके लिए भीष्म पितामह जैसे **आत्म चक्षु** होने आवश्यक हैं।

तुम्हारी ये आंखें, मेरे शरीर को, मेरे कार्यों को ही देखती हैं, अन्दर पहुंचने की क्रिया नहीं कर पातीं, और जब तक ऐसा नहीं हो पाता, तब तक उन सोलह कलाओं से सम्पन्न व्यक्तित्व को पहिचाना भी नहीं जा सकता, उसके लिए तो तीव्रता चाहिए, वेग चाहिए, और समर्पण की अथाह प्रवृत्ति होनी चाहिए।

और फिर शरीर तो कुछ समय रहता है, फिर चला जाता है, जब तक शरीर रहता है, तब तक हम भ्रम में ही पड़े रहते हैं, पर शरीर जाने के बाद हम उसके मन्दिर बनाते हैं, राम की मूर्ति स्थापित करते हैं, कृष्ण की जय-जयकार करते हैं, बुद्ध की चेतना से अनुप्राणित होते हैं, पर फिर वह आनन्द कहां रह जाता है? फिर तो स्मृतियों के सहारे जीवन काटना पड़ता है, पर जब तक वह शरीर है, तब तक उन्हें प्राप्त कर लेना, उनके पास ज्यादा से ज्यादा बैठना और उनके साथ जीवन के क्षण व्यतीत करना एक सौभाग्य है, आने वाले युग में इतिहास का निर्माण करना है, क्योंकि आने वाला युग भी तुम्हारा नाम उस **प्रज्ञा पुरुष** के साथ जोड़ कर पढ़ेगा और तुम गर्व से अभिभूत हो सकोगे, तुम्हारी आने वाली पीढ़ियां उज्ज्वल कीर्ति से सुशोभित हो सकेंगी, कि हमारे पूर्वज भी उस अद्वितीय प्रज्ञा पुरुष के व्यक्तिगत सम्पर्क में रहे थे, और यह सौभाग्य बड़ी कठिनाई से प्राप्त होता है।

इसलिए यदि भ्रम, संदेह और तर्क में तुम और समय व्यतीत कर लोगे तो तुम्हारे हाथ में भ्रम, तर्क और संदेह ही रह जायेगा, उस दिव्य शरीर को स्पर्श करने का, उनके साथ बैठने का, लिपटने का, आत्मसात होने का सुख प्राप्त नहीं हो सकेगा, फिर भले ही कितने ही मन्दिर बना लेना, कितने ही घण्टे-घड़ियाल बजा लेना, वह चेतना, वह सर्वोच्च सुख कैसे सम्भव है? इसलिए जो क्षण तुम्हारे पास है उनका उपयोग ही जीवन को सौभाग्य में परिवर्तित कर देने की क्रिया है। ●

सतत् गुरु दृश्य-श्रव्य तिब्बती यन्त्र

गुरुदेव को निरन्तर देख सकें, और उनका पथ प्रदर्शन पा सकें, इसके लिए पूज्य गुरुदेव ने अपनी प्रज्ञा से एक विशेष यन्त्र प्रदान किया है जिसे पहिन कर या अपनी मुट्ठी में रख कर ध्यान करें, तो उनका स्पष्ट बिम्ब आंखों के सामने आ जाता है, और परस्पर वार्ता होने लगती है, ऐसा लगता है कि जैसे वे पास में बैठें हों, और प्रत्येक संकट में, परेशानी में, उलझन में रास्ता दिखा रहे हों।

इसके लिए अग्रिम धनराशि भेजने की जरूरत नहीं है, क्योंकि यह आपको पत्रिका की तरफ से निःशुल्क उपहार है, आप पत्र में या पोस्टकार्ड पर लिख दें, कि आप **"गुरु दृश्य-श्रव्य तिब्बती यन्त्र"** चाहते हैं, और हम आपको १९९२ का पत्रिका शुल्क तथा डाक खर्च जोड़ कर वी०पी० से यह यन्त्र निःशुल्क भेज देंगे।

वी०पी० छुड़ाते ही आपको उस धनराशि से १९९२ का सदस्य बना दिया जायेगा, या अपने किसी मित्र अथवा परिचित को पत्रिका सदस्य बना कर भी यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

उच्चकोटि के साधकों के लिये

पारद माला

यह तो त्रैलोक्य विजय माला है !

उच्चकोटि के तांत्रिक ग्रन्थों में इस माला का उल्लेख मिलता है, परन्तु इसकी स्पष्ट व्याख्या पूर्ण रूप से किसी एक ग्रन्थ में नहीं है, यह श्रेष्ठतम् माला योगेश्वर **श्री कृष्ण** एवं मर्यादा पुरुषोत्तम **श्री राम** के गले मे निरन्तर विद्यमान रहती थी, योगियों ने, जो कि राजाओं के भी राजा समझे जाते हैं, इस माला को सिद्ध कर अपनी उच्चता, दिव्यता प्रकट की है।

गुरु मुख से प्राप्त इस विवेचन को पत्रिका पाठकों के लिये सार-गर्भित रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

आज जब हम प्राचीन ग्रन्थों में पढ़ते हैं, कि वशिष्ठ ऋषि के आश्रम में बड़े से बड़े राजा भी सामान्य शिष्य की तरह ज्ञान ग्रहण करते थे, सम्राट अशोक भी ज्ञान प्राप्ति के लिए बुद्ध के पास अपने राजसी परिधान त्याग कर सामान्य व्यक्ति की तरह याचक बन कर गये, तो यह प्रश्न अवश्य उठता है कि इन योगियों के पास ऐसा क्या था, जो शक्ति सम्पन्न राजाओं के पास भी नहीं था ?

सहस्त्र वर्षों तक हिमालय में निःवस्त्र साधना करने वाले योगियों के पास ऐसी क्या शक्ति थी, जिससे वे भूख-प्यास, शीत से रहित हो जाते थे, जहां सामान्य मनुष्य पहुंच नहीं पाता, वहां सुन्दर उष्णतायुक्त आश्रम, यह सब

चमत्कारिक लगता है, थोड़ा कल्पित लगता है, लेकिन यह धारणा बिल्कुल गलत है, ऐसी शक्ति उनके पास अवश्य थी।

माला और उसका महत्व

किसी भी साधु के पास और कुछ भी नजर आए अथवा न आए उसकी झोली खाली हो, लेकिन गले में माला अवश्य नजर आयेगी, क्योंकि माला के बिना एक अधूरापन रहता है, और आज-कल तो जितनी ज्यादा मालाएं होती हैं, उसे उतना ही बड़ा साधु-योगी मान लिया जाता है ! आखिर माला ही क्यों ? इसके पीछे क्या रहस्य है ?

ये लोग तो वास्तव में माला का महत्व ही नहीं समझते हैं, और न ही इनकी मालाएं शुद्ध और मन्त्र सिद्ध होती हैं।

वास्तव में माला तो कुण्डलिनी शक्ति का स्वरूप है, मूलाधार से आज्ञा चक्र तक ये सभी बिन्दु शुद्ध माला से जुड़े होते है, और जिस प्रकार आरोह से अवरोह क्रम अर्थात् नीचे से ऊपर व ऊपर से नीचे कुण्डलिनी शक्ति के बिन्दु जुड़े होते हैं, इसी प्रकार श्रेष्ठ माला में इन बिन्दुओं को जोड़ा जाता है।

पारद माला : त्रैलोक्य विजय माला

पारद माला का ही दूसरा नाम **त्रैलोक्य विजय माला** है, इसे **"त्रैलोक्य विजयिनी", 'त्रैलोक्य भुवन मोहिनी'** तथा **'त्रैलोक्य शक्ति प्रदायक'** के नाम से भी पुकारा जाता है, इस माला को धारण करने से ६४ सिद्धियां और नव निधियां स्वतः प्राप्त हो जाती हैं, जहां एक ओर संसार का समस्त वैभव, सुख, ऐश्वर्य एवं आनन्द पहिनने वाले को प्राप्त होता है, वहीं दूसरी ओर कई सिद्धियां उसे स्वतः प्राप्त होने लगती हैं, इसीलिए इस माला को **"त्रैलोक्य पारद माला"** कहा गया है।

इसके पहिनने से दरिद्रता का नाश होता है, तथा श्रेष्ठ एवं आकस्मिक धन लाभ होने की संभावना बढ़ती है, शरीर के समस्त रोग स्वतः ही धीरे-धीरे कम होने लगते हैं, और व्यक्ति स्वस्थ, निरोग, सौन्दर्यशाली बनता है, इसके पहनने से आंखों की ज्योति बढ़ती है, तथा मस्तिष्क क्रियाशील होता है, व्यापार में तथा राज्य कार्यों में विशेष सफलता प्राप्त होती है, इसके धारण करने से व्यक्ति का पौरुष तथा व्यक्तित्व अपने आप में बढ़ता है, और उसमें अत्यधिक जोश, साहस, हिम्मत एवं आत्मविश्वास की भावना बढ़ जाती है, सबसे बड़ी बात यह है, कि इस माला को धारण करने के बाद व्यक्ति समस्त कार्यों में सफलता पाने लगता है, जिसकी भी नजर ऐसी माला पर पड़ती है, वह उसके वश में होकर उसके अनुकूल कार्य करने लग जाता है, आवश्यकता इस बात की है, कि माला को नियमित रूप से पहने रहें, और विश्वास के साथ इस माला को धारण करते हुए साधना में अनुरक्त रहें।

पारद त्रैलोक्य विजय माला—निर्माण विधि

पूरे वर्ष में केवल चार रात्रियों को ही इस पारद माला का निर्माण किया जा सकता है, ये चार विशेष मुहूर्त हैं—

१-महाशिवरात्रि २-गुरु पूर्णिमा रात्रि ३-कृष्ण जन्माष्टमी रात्रि ४-दीपावली रात्रि।

इन चारों रात्रियों को सूती अथवा रेशमी बारीक धागे को ८८ आवृत्तियुक्त बना कर उसे बटकर एक धागा बनाया जाता है, यह ८८ आवृत्ति ८८ सिद्धियों की प्रतीक है, और इन ८८ सिद्धियों से सम्बन्धित मन्त्र उच्चारण कर धागे को पुनः बटा जाता है, जिससे इसमें ५१ संस्कारयुक्त पारद की मणि बना कर इस धागे में पिरोया जा सके।

तत्पश्चात् इसे अपने पूजा स्थान में शुद्ध स्थान पर रखकर केसर से त्रिविधात्मक महाशक्तियों का पूजन किया जाता है, सबसे पहले महाकाली निर्लेख, जिससे धागा और उसमें पिरोयी जाने वाली मणियां शत्रु संहारक हो सकें, फिर महालक्ष्मी निर्लेख, जिससे इस धागे से युक्त माला को धारण करने वाला अटूट लक्ष्मी का स्वामी बन सके, तत्पश्चात् महासरस्वती बीज मन्त्र से निर्लेख किया जाए, जिससे धारण करने वाला चतुर, योग्य वक्ता तथा प्रभावशाली व्यक्ति बन सके, इसके पश्चात् धागे के दोनों किनारों पर महागणपति और कुबेर मन्त्र से प्राण संचारित करें, तथा दोनों ओर भैरव सिद्ध कर उस धागे को संजीवन क्रिया से अनुरक्त करें।

इसके पश्चात् उस धागे को १०८ सिद्धियों से सम्बन्धित मन्त्रों से आपूरित करें, आपूरित करते समय धागे पर ही **"नवयोन्यात्मकयन्त्र"** का चित्रण करें और श्रीयन्त्र मन्त्रों से उसे सिद्ध करें, श्रीयन्त्र सिद्ध करते समय अधोमुखी एवं उर्ध्वमुखी त्रिकोणों के उल्लेख से उस धागे को सिद्ध करें, जिससे कि वह कुबेर पूरित सिद्ध बन सके, धागे के दोनों ओर पद्माकृति बनाएं और उसमें षोडशी तथा कमला की स्थापना करें।

तत्पश्चात् दीपक प्रज्वलित कर मनका पिरो लें और त्रिविधात्मक गांठ लगाने की क्रिया सम्पन्न की जाती है, यह कार्य केवल मध्य रात्रि के बाद ही सम्पन्न किया जाता है, इसके प्रत्येक मनके को पहले पंचगव्य से फिर पंचामृत से स्नान कराकर, शुद्ध कर गंगाजल से मार्जन कराया जाता है, इस मार्जन में १६ बलों का संचरण करते हुए अनंग और रति मन्त्रों से आपूरित किया जाता है, जिससे शरीर के १६ अंग सुदृढ़ हो सकें, तत्पश्चात् पंचदशी मन्त्र का ३० बार उच्चारण कर पारद मनके को पिरोया जाता है।

प्रत्येक मनका मन्त्र सिद्ध करें—

साधना से सम्पूरित प्रत्येक मनके का अलग-अलग होना जरूरी है, इसके लिए अलग चांदी के पात्र में **स्वर्णाकर्षण भैरव** का संहार क्रम से यन्त्र उत्कीर्ण करें, तथा सृष्टि क्रम से इसके मध्य में **धनदा यक्षिणी** की स्थापना करें, तत्पश्चात् **शरभ देवता, आकाश भैरव** तथा **स्वर्णाकर्षण भैरव** का लोम-विलोम गति से मन्त्र का उच्चारण करता हुआ एक मनके को इस धागे में पिरोएं, पिरोने के बाद मनके के वाम पार्श्व में रति तथा दक्षिण पार्श्व में कामदेव की स्थापना करें, स्थापना करते समय **धनदा पंचदशी** मन्त्र का चित्रण उस मनके पर करते हुए १०८ बार **पंचदशी मन्त्र** का उच्चारण करें, इसके बाद उस मनके का **मृत संजीवनी विद्या** से संजीवन करें, मार्जन करें और **धनदा सिद्ध लक्ष्मी** से सम्पूरित करें, धनदा पंचदशी में भैरव क्रम से ही मन्त्र जप किया जाय, इसका उल्लेख **'रहस्य साधन'** ग्रन्थ में विस्तार से स्पष्ट हुआ है।

इसके बाद उस मनके पर **सोलह स्वर्णाकर्षण यक्ष** तथा **सोलह स्वर्णाकर्षण भैरवियों** का आह्वान कर स्थापन करें और **काम पूजा, अनंग उत्कीर्णन्य** तथा **रति चर्या** सम्पन्न करें, ऐसा करने पर वह एक मनका अपने आप में सिद्ध होता है।

इसके पश्चात् एक ताम्र कुण्ड में यज्ञ अनुष्ठान सम्पन्न किया जाता है, इसमें अग्नि प्रज्वलित कर **कामदा मन्त्र से पंच प्रसाद** की पांच आहुतियां तत्पश्चात् **श्रीसूक्त** की १६ आहुतियां, **रति मन्त्र** से ५ आहुति और अन्त में **अनंग मन्त्र** से पांच आहुति दे कर यज्ञ के धूम्र से मनकों को आपूरित किया जाता है, इस प्रकार करने से प्रत्येक मनका सिद्ध हो जाता है।

प्रत्येक दो मनकों के बीच

प्रत्येक दो मनकों के बीच जो गांठ लगाई जाती है, वह वास्तव में तीन गांठें इस प्रकार लगाई जाती हैं, कि बाहर से देखने पर एक ही गांठ दिखाई दे, इन तीनों गांठों का आधार ब्रह्मा, विष्णु और महेश मन्त्रों का दें, पहले ब्रह्मा के लोम-विलोम मन्त्र एवं रति प्राण संचारित करें,

फिर विष्णु के पालन क्रम से आधार रूप प्रदान करें, फिर रुद्र के संहारक्रम में शत्रु संहार भावना आपूरित करें, और तत्पश्चात् पहली गांठ को ब्रह्मा और महाशक्ति बीज मन्त्र से सिद्ध करें, बीच वाली गांठ को विष्णु और महालक्ष्मी बीज मन्त्र से संस्पर्शित करें, और तीसरी गांठ को महाकाली तथा रुद्र बीज मन्त्रों से आपूरित करें।

इनमें से प्रत्येक गांठ का पंचामृत से पूजन करें, और शरीर के समस्त अंगों-उपांगों में करणी कोकरी मन्त्र **विन्यास से भावना दें और उसे सिद्ध करें, ऐसा करने पर प्रत्येक गांठ पूर्णतः चैतन्य और स्वऊर्जा युक्त हो सकेगी।**

जब माला का निर्माण हो जाता है, तो सुमेरु संचरण प्रक्रिया सम्पन्न की जाती है, इस प्रक्रिया में पश्चिम की ओर मुंह कर अपने सामने चांदी के पात्र में **मणिकर्ण** का मन्त्र उत्कीर्ण कर धनदा पंचदशी मन्त्र कुंकुम से बनाया जाता है, फिर धनदा पंचदशी के ३० पाठ और माला को पात्र के मध्य में रखकर **श्रीसूक्त** के ५१ पाठ सम्पन्न कर, चौंसठ योगिनियों, अष्ट भैरव की स्थापना की जाती है, तत्पश्चात् महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती, रुद्र, विष्णु और ब्रह्मा के मन्त्रों का उच्चारण कर माला के दोनों छोरों को परस्पर मिलाकर पीछे लिखे क्रम के अनुसार तीन गांठें लगाई जाती हैं, तत्पश्चात् सुमेरु का आधार शक्ति से पूजन कर पुनः तीनों महाशक्तियों और तीनों महादेवताओं के मन्त्रों से संपुटित किया जाता है।

यह तो अद्वितीय है—

इस प्रकार जो पारद त्रैलोक्य विजय माला का निर्माण और पूजन किया जाता है, उस विधि में किसी भी प्रकार की गलती नहीं होनी चाहिये, उसी क्रम में संपुटित करने से ही माला में शक्ति का उद्भव होता है।

इस प्रकार यह अद्वितीय माला धारण करने वाला व्यक्ति सभी दृष्टियों से पूर्ण सफलता प्राप्त करने में सक्षम हो जाता है।

पूज्य गुरुदेव के शिष्यों के लिये :—

यह तो स्पष्ट है कि सामान्य साधक इतना लम्बा-चौड़ा अनुष्ठान सम्पन्न नहीं कर सकता, लेकिन इस महत्वपूर्ण **त्रैलोक्य विजय पारद माला** को सिद्ध करने के लिए अनुष्ठान सम्पन्न करना ही पड़ेगा और इसके लिए पूज्य गुरुदेव से निवेदन करना पड़ा कि यह जटिल कार्य हम शिष्यों के लिए सम्पन्न करने की कृपा करें।

जब गुरुदेव स्वयं अपने निर्देश में अनुष्ठान सम्पन्न कराते हैं तो फिर उसमें पूर्णता ही होती है और यह लिखते हुए हर्ष हो रहा है कि पिछले कुछ विशेष मुहुर्तों में पूज्य गुरुदेव ने ऐसा विशिष्ट **पारद त्रैलोक्य विजय मालाएं** अनुष्ठानयुक्त सिद्ध कराई थीं, और ऐसा ही विशेष अनुष्ठान दीपावली की रात्रि को सम्पन्न कर कुछ दिव्य मालाएं तैयार की जाएंगी।

पूज्य गुरुदेव ने अपने प्रवचनों में बार-बार कहा है कि मेरे लिए सभी शिष्य समान हैं, चाहे वह बिहार के गांव में रहने वाला शिष्य हो अथवा बम्बई का रहने वाला हो, इनमें कोई भेद नहीं, इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय किया गया है कि जिस क्रम से पत्र आएंगे उसी क्रम से मालाएं भेजी जाएंगी, अतः इसे प्राप्त करने का निर्णय आपको लेना है और सम्बन्धित पत्र पहले भेज देंगे तो निराश नहीं होना पड़ेगा।

यह "त्रैलोक्य विजय पारद माला" ही इतने प्रबल अनुष्ठान युक्त है कि इसको धारण करने की विधि अत्यन्त सरल है, किसी भी गुरुवार को गुरु पूजन कर, ग्यारह माला गुरु मन्त्र की जप कर, इसे धारण कर लें, इस माला को श्मशान, शौच के समय उतार दें, अन्य समय इसे धारण किये रख सकते हैं। ●

तिब्बती साधना

का

अभिनव प्रयोग

वशीकरण सिद्धि

जो पत्थर दिल को भी अपने पीछे चलने के लिए मजबूर कर सकता है

वशीकरण सिद्धि दिवस (१६-१२-९१)

के अवसर पर

प्रत्येक धर्म में साधना की विशेष पद्धतियां प्रचलित हैं, हिन्दू धर्म समाज में भी विभिन्न प्रकार के मत सम्प्रदाय प्रचलित हैं, इनका स्रोत वर्तमान काल से नहीं अपितु आदि काल से है, इसमें भी मुख्य रूप से वैष्णव सम्प्रदाय, शैव सम्प्रदाय, जैन-सम्प्रदाय, बौद्ध सम्प्रदाय प्रमुख हैं, इन सभी सम्प्रदायों का साधनात्मक विज्ञान अत्यन्त विकसित है, किसी एक पद्धति को दूसरी पद्धति से श्रेष्ठ कहना भूल है।

साधना मार्ग पर चलने वाला साधक यदि किसी एक मत पर स्थिर हो कर उसे ही सर्वश्रेष्ठ मानते हुए कार्य करता रहता है, तो उसके साधनात्मक तत्व का सम्पूर्ण विकास नहीं हो सकता, यह तो सामान्य जीवन दर्शन है, कि आप बाजार में कोई वस्तु खरीदने जाते हैं, तो जिस दुकान पर श्रेष्ठ वस्तु मिलती है, वहीं से खरीदते हैं, मंहगी अथवा सस्ती होने का प्रश्न तो बाद में आता है, वस्तु के गुण-अवगुण पर पहले ध्यान देते हैं, ठीक यही स्थिति साधना के सम्बन्ध में भी है, यदि कोई साधना श्रेष्ठ है, पद्धति श्रेष्ठ है, तो उसे अपनाने में कोई संकोच नहीं करना चाहिए, क्योंकि साधना का लक्ष्य तो कुछ श्रेष्ठ तत्व प्राप्त करना है, और यह ध्यान रखना आवश्यक है, कि यह श्रेष्ठ तत्व कुण्डलिनी से जुड़ा है, इसके किस स्तर तक आप अपनी साधना के माध्यम से इसे जाग्रत करते हैं, उसी स्थिति तक फल प्राप्ति के अधिकारी रहते हैं।

तिब्बती साधना पद्धति

तिब्बती साधना मूल रूप से बौद्ध साधना का स्वरूप है, बौद्ध उपासना में मध्यवर्ती मार्ग अपनाया गया है, जिसमें संसार को दुःखमय नहीं माना है, और न ही जीवन को भोग-विलास की वस्तु समझा है, बुद्धमत के अनुसार शारीरिक और मानसिक शुद्धि से मनुष्य में विशेष ज्ञान धारण करने की योग्यता उद्भूत होती है, और इसका उपाय है अष्टांगिक मार्ग, इसे सामान्य भाषा में 'दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा' **भी कहा गया है।**

अष्टांगिक मार्ग के आठ अंग हैं—१-सम्यक्दृष्टि, २-सम्यक् संकल्प, ३-सम्यक् वाक् ४-सम्यक्-कर्मान्ति, ५-सम्यक् आजीव, ६-सम्यक् व्यायाम, ७-सम्यक् स्मृति, ८-सम्यक् समाधि।

"धम्मपद ग्रन्थ" के अनुसार जो उपासक इस मार्ग पर चलता है, वह अपने शरीर के माध्यम से कुछ भी करने में समर्थ हो जाता है, इसके लिए अभ्यास एवं चित्त की एकाग्रता आवश्यक है।

इस सम्बन्ध में मूल रूप से **"आचार्य असग"** को 'योगाचार', 'दार्शनिक सिद्धान्त', 'बौद्ध तन्त्र' का प्रवर्तक माना जाता है, आचार्य असग ने इस महायानी उपासना पद्धति में विशेष प्रकार के गुह्य तन्त्र-मन्त्र धारिणी का सूत्रपात किया और इसी के फलस्वरूप इन साधना तत्वों, नीति पद्धति, पूजा अनुष्ठान आदि का व्यापक प्रचार हुआ।

इन सिद्धाचार्यों द्वारा रचित कई तांत्रिक मूल ग्रन्थ विलुप्त हो गये हैं, यद्यपि कुछ मूल ग्रन्थों के तिब्बती अनुवाद उपलब्ध हैं, इसमें मुख्य रूप से सात ग्रन्थों को मूल ग्रन्थ माना गया है, ये रचनाएं हैं—

१-आर्यमंजुश्रीमूल कल्प, २-श्री गुह्य समाज-तन्त्रम्, ३-प्रज्ञोपाय विनिश्चय सिद्धि, ४-ज्ञान सिद्धि, ५-अद्धय वज्र संग्रह, ६-साधना माला, ७-निष्पन्न योगावली।

वज्रयान साधना—वशीकरण साधना

तिब्बती लामा अपने जीवन में इस साधना का विकास विशेष रूप से करने का प्रयत्न करते हैं, क्योंकि इस साधना में पूर्ण सफलता के द्वारा ही साधक अपने भीतर एक वज्र भाव जिसे 'आदि बुद्ध भाव' भी कहा जाता है, भर देता है, और इस **'वज्रयान'** भाव के कारण एक 'महासुख' की उत्पत्ति होती है, और इस महासुख के कारण साधक अपनी इच्छानुसार कार्य कर सकता है, उसकी सिद्धि असीमित हो जाती है, वह जिसे चाहे अपने वश में कर सकता है, उसके लिए जड़ पदार्थ और चेतन पदार्थ दोनों में कोई भेद नहीं रहता, अर्थात् वह किसी भी जीवित मनुष्य, पशु को तो वश में कर सकता है, साथ ही निर्जीव वस्तुओं को भी अपने आधीन कर उन्हें वशीभूत कर सकता है।

इस सम्बन्ध में इस विशेष सिद्धि का वर्णन करते हुए, **लामा इन्द्रभूति** जिनका नवीं शताब्दी में लिखित **ज्ञान-सिद्धि** ग्रन्थ सर्वोत्तम है, लिखते हैं—

अशेषयोगतन्त्रोक्तं वज्रयानमनुत्तरम्।
ये न जानन्ति मूढ़ास्ते भ्रमन्तीह भवार्णवे॥

अर्थात्, असंख्य योग तन्त्रों में वज्रयान ही सर्वोत्तम है, जो मूर्ख लोग इसको नहीं जानते, वे संसार में कुछ भी नहीं कर सकते हैं।

आगे किसी ग्रन्थ में लिखा है—

कल्पनाजलपूर्णस्य संसारस्य महोदधेः।
वज्रयानमनारुह्य को वा पारं गमिष्यति॥

अर्थात्, इस कल्पना रूपी जल से परिपूर्ण संसार सागर को वज्रयान पर आरुढ़ हुए बिना पूर्णता कैसे प्राप्त की

जा सकती है ? सम्पूर्ण कल्पनाओं को प्राप्त करने के लिए वज्रयान साधना ही पूर्ण साधना है ।

साधना पद्धति

तिब्बती लामाओं के अनुसार इस साधना प्रक्रिया को सम्पन्न कर, इसमें पूर्णता प्राप्त कर वे किसी भी व्यक्ति को अपने वश में कर सकते हैं, चूंकि उनकी साधना में मूल भाव पूर्ण बुद्धत्व प्राप्त करना रहता है, सांसारिक माया जाल से अलग रहते हुए भी उन्हें अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करनी होती है, इस कारण वे इसका उपयोग अत्यन्त सीमित रूप में ही करते हैं ।

"श्री गुह्य समाज तन्त्रम्" महाग्रन्थ में लिखा है, कि गृहस्थ व्यक्ति को वशीकरण की यह मूल साधना गुरु आज्ञा तथा गुरु द्वारा दिये गये निर्देशों के अनुसार ही सम्पन्न करनी आवश्यक है, तभी वह इस साधना में श्रेष्ठता प्राप्त कर सकता है, इस साधना के अनुष्ठान को **"बोधि चित्ताभिषेक अनुष्ठान"** कहा जाता है, और इसका मन्त्र 'शब्द बीज' होता है, और जब साधना की पूर्णता होती है तो यह शब्द बीज साधक के सामने मूर्तिमान हो कर उपस्थित होता है, विशेष प्रकार की देव शक्तियों का आविर्भाव होता है, और साधक की मानसिक क्षमता, उसके साधनात्मक स्तर के अनुसार ये देव शक्तियां साधक में एक मण्डल की सृष्टि करते हैं ।

विशेष तत्व

इस साधना की मूल अधिष्ठात्री देवी **"वज्रधात्रीश्वरी"** है, पूजा अनुष्ठान में प्रयुक्त धूप, दीप, शंख, घंटा, गन्ध, पुष्पमाला, तिल, जौ, आसन, ध्वजा, कलश, वस्त्र, अक्षत, अर्घ्य, अंजली, पंचामृत सभी उपकरण 'वज्र' से नामांकित होते हैं ।

साधना में विशेष रूप से **१ 'वज्रधात्रीश्वरी बोधि यन्त्र' २ 'तीन वज्रयान सम्यक,' ३ 'चिदानन्द रूपात्मक सिद्धि माला'** आवश्यक है ।

इन सब श्रेष्ठ उपकरणों को, जो कि गुरु आज्ञा से प्राप्त हों, उसके पश्चात् ही साधना सम्पन्न करनी चाहिए, और अपने मन में वज्र समान दृढ़ता धारण कर कार्य करना आवश्यक है ।

मूल दिवस साधना विधान

साधना दिवस के दिन साधक प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में जल्दी से उठ कर अपने पूजा स्थान को शुद्ध और स्वच्छ करें, साधना सामग्री को अपने पास रख लें और साधना प्रारम्भ करने के पश्चात् अपने स्थान से बाहर न जाएं और न ही किसी से वार्तालाप करें, लाल रंग के आसन पर बैठें, सामने दीवार पर एक लाल कपड़ा लगा दें, बीचों-बीच अपने नेत्रों की सीध में सामने शक्ति चक्र, जो कि कागज पर बना हो, उसे लगा दें ।

अब हाथ में जल लेकर सर्वप्रथम नेत्र बन्द कर 'ॐ' ध्वनि का ग्यारह बार उच्चारण कर जल को भूमि पर छोड़ दें ।

तत्पश्चात् पुनः अपने हाथ में जल लेकर निम्न संकल्प मन्त्र का उच्चारण कर जल को भूमि पर छोड़ दें—

संकल्प मन्त्र

अहो बताहं अनुत्तरां सम्यक् सम्बोधिं अभिसंबुध्येयं सर्व सर्वसत्वानाम् अर्थाय तियाय सुखाय यावद् अत्यन्तनिष्ठे निर्वाणधातौ बुद्धबोधो प्रतिष्ठापनाय च एषोऽहम् अनुत्तर-सम्यक् सम्बोधि मार्गमाश्रयामि यदुत वज्रयानम् ॥

सामने एक चौकी पर **वज्रधात्रीश्वरी यन्त्र** स्थापित करें और उसके सामने नीचे **तीन वज्रयान सम्यक** क्रमशः तिल, जौ तथा अक्षत (चावल) की ढेरी पर स्थापित करें, प्रत्येक के सामने एक-एक दीपक अलग-अलग प्रज्वलित करें, अब गुरु यन्त्र अथवा गुरु चित्र के समक्ष गुरु

पूजन सम्पन्न कर, गुरु ध्यान कर, ग्यारह बार गुरु मन्त्र का जप कर गुरु से आज्ञा प्राप्त कर अनुष्ठान प्रारम्भ करें, तथा एक बड़े पात्र में अथवा थाली में जो भी सामग्री रखी है, वह यन्त्र के सामने अर्पित करें, प्रत्येक सामग्री अर्पित करते समय मन्त्र उच्चारण निम्न प्रकार से होगा—

पुष्प : ॐ वज्रपुष्पे हुं स्वाहा
धूप : ॐ वज्रधूपे हुं स्वाहा
गन्ध : ॐ वज्रगन्धे हुं स्वाहा
दीपक : ॐ वज्रदीपे हुं स्वाहा
अक्षत : ॐ अक्षते हुं स्वाहा
पंचामृत : ॐ पंचामृते हुं स्वाहा
नैवेद्य : ॐ नैवेद्ये हुं स्वाहा
इति सर्वदातव्यम्

इस प्रकार उच्चारण कर अन्य सभी सामग्री भी सामने अर्पित कर दें।

इस वज्रस्वरूपता वशीकरण साधना का मूल तत्व मौन रहते हुए भीतर बोधित्व जाग्रत करना है, नीचे लिखा मन्त्र साधक स्मरण कर उसे अपने सामने लाल पर्दे पर बनाये गये शक्ति चक्र को देखते हुए **चिदानन्द रूपात्मक सिद्धि माला** से जप प्रारम्भ करें, यह जप ग्यारह माला करना आवश्यक है।

मूल मन्त्र

।। ॐ स्वभाव शुद्धाः सर्वशक्ति तत्वोहं स्वभाव-शुद्धोहम् ॐ सर्वतथातात्मकोऽहम् ।।

इस मन्त्र अनुष्ठान को सम्पन्न करते समय यदि साधक को शक्ति चक्र में से कुछ किरणें निकलती दिखाई दें, कुछ चिनगारी जैसा निकलता दिखाई दे, तो चिन्ता नहीं करें, अपना ध्यान स्थिर रखते हुए मन्त्र जप अनुष्ठान सम्पन्न करते रहें।

जब मन्त्र जप अनुष्ठान पूर्ण हो जाय तो साधक २१ बार निम्न मन्त्र जोर से अवश्य बोले—

।। ॐ चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ।।

विशेष आवश्यक

वशीकरण की यह सर्वोत्तम साधना तीव्र साधना है, साधक के भीतर एक दृढता भर देती है, और अपने जीवन के शुद्ध कार्यों हेतु यदि साधक विचार करता है, तो उसे श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त हो जाती है, जिसे भी वशीभूत करना चाहता है, वह उसके सामने वशीभूत अवश्य हो जाता है।

किसी विशेष उद्देश्य की पूर्ति हेतु, किसी विशेष शत्रु बाधा की शान्ति हेतु, किसी विशेष बाधा के निवारण हेतु इस अनुष्ठान को सम्पन्न किया जाना चाहिए, साधना में मूल भावना गलत उद्देश्य नहीं होना चाहिए, तभी साधना की सार्थकता है, जीवन शुद्ध से शुद्ध हो, तेजस्वी बने और पूर्ण ब्रह्मत्व की ओर, गुरुत्व की ओर जीवन बढ़े, यह भावना सदैव रखनी चाहिए।

जब भी जीवन में संकट उपस्थित हो, तो साधक पूर्ण विधि-विधान से यह साधना सम्पन्न कर सकता है, और अवश्य करें।

पीताम्बरा शक्ति

बगलामुखी साधना

जिसने भी सिद्ध की

उसने

भय, शत्रुबाधा, कलह से मुक्ति पाई

देवी बगलामुखी का स्थान शक्ति के दस महाविद्या स्वरूपों में प्रमुख है, शत्रु बाधा से मुक्ति, कलह-नाश, तिरस्कार से छुटकारा, भय-मुक्ति हेतु बगलामुखी देवी की साधना से तीव्र कोई साधना नहीं है।

आज हम यह विशेष तांत्रोक्त पद्धति साधकों हेतु स्पष्ट कर रहे हैं, यह गुह्यतम पद्धति से साधना गुरु भक्ति में पूर्ण ध्यान रखने वाले, गुरु पूजन करने वाले साधक भाइयो के लिए है, इस तीव्र साधना का आधार गुरु भक्ति ही है।

प्रत्येक व्यक्ति जीवन को अपनी इच्छानुसार, आनन्द से जीना चाहता है, और यह आनन्द, तुष्टि प्राप्त करने के लिए निरन्तर इच्छा रखता है, और प्रयत्न भी करता रहता है, लेकिन क्या सब जगह ऐसा ही होता है? इसका यही उत्तर मिलेगा, कि ऐसा संभव नहीं हो पाता, वास्तविक जीवन में तो कष्ट आते हैं, बार-बार बाधाएं उपस्थित होती हैं, इनके कारणों की व्याख्या करने से इनकी शान्ति नहीं होती, इनको दूर करने के उपाय से ही आनन्द की रस धारा बह सकती है।

अमृत या विष

एक बड़े बर्तन में सुस्वादु, श्रेष्ठ दूध भरा है, और आप इसका पान करना चाहते हैं, इस दूध में खटाई की कुछ बूंदें डाल दें तो क्या होगा? सारे के सारे पात्र का दूध अपना गुण खो देगा, फट जायेगा, पीने के लायक नहीं रहेगा, बाहर फेंकने के अलावा क्या चारा है?

अमृत में भी विष की बूंदें डाल दें, तो पूरा का पूरा अमृत विष समान हो जाता है, आपने बहुत प्रयत्न कर

जीवन में अमृत का कलश भरा, आनन्द का प्रवाह करने का प्रयत्न किया, लेकिन किसी ने विष की बूंदें डाल ही दीं।

इसी प्रकार जीवन में चार बड़े विष हैं, जिनके रहते जीवन में आनन्द आ ही नहीं सकता, ये चार जीवन विष हैं—१-शत्रु बाधा, २-कलह, ३-तिरस्कार, ४-भय।

एक महापुरुष का लिखना है, कि शत्रु तो चौबीस घंटे आप पर सवार रहता है, मित्र से तो आप कभी-कभी मिलते हैं, लेकिन यदि आपका कोई शत्रु है तो आपका चिन्तन हर समय उसकी ओर रहेगा, आपका विचार प्रवाह बदल जायेगा, हर समय आशंकित रहेंगे, ऐसा जीवन क्या जीवन है?

आपको कोई पुरस्कृत न करे, तो कोई अन्तर नहीं पड़ता, लेकिन कोई आपका तिरस्कार करे, कोई आपको तुच्छ समझे, तो यह मरण समान ही है।

कलह जीवन की सभी कलाओं का नाश कर देता है, कलह शारीरिक क्षति तो पहुंचाता ही है, मानसिक दृष्टि से भी सामान्य व्यक्ति कमजोर हो जाता है, वह कुछ संरचनात्मक कार्य करना चाहता है, लेकिन यदि नित्य प्रति कलह का सामना करना पड़े, चाहे वह कलह परिवार से हो, अथवा बाहर के लोगों से, जीवन का आनन्द तत्व तो समाप्त हो ही जाता है।

चौथी महत्वपूर्ण विपरीत स्थिति भय है, यह भय शत्रु से हो सकता है, अपने अधिकारी से हो सकता है, अपने व्यापारिक प्रतिस्पर्द्धी से हो सकता है, भय के तो सैकड़ों प्रकार हैं, इसमें से एक भी भय यदि व्यक्ति को है तो सामान्य रूप से जीवनयापन नहीं कर सकता है।

यह चारों स्थितियां विष हैं, और विष को अपने जीवन से दूर करने का, इस विष को नष्ट करने का एक उपाय है, वह है गुरु भक्ति, गुरु भक्ति से गुरु कृपा, गुरु कृपा से साधना में सिद्धि।

बगलामुखी साधना

बगलामुखी देवी का स्वरूप ही दस महाविद्याओं में सबसे निराला है, त्रिनेत्री देवी अपने हाथ में मुग्दर, वज्र, पाश और शत्रु की जीभ लिये तीव्रतम रूप में तीनों लोकों को स्तम्भित कर देने वाला स्वरूप है।

ऐसा तीव्र स्वरूप और इस तीव्र स्वरूप में सोलह शक्तियां समाहित हैं, ये १६ शक्तियां हैं—

१-मंगला, २-स्तम्भिनी, ३-जृम्भिणी, ४-मोहिनी, ५ वश्या, ६-चला, ७-बलाका ८-भूधरा, ९-कलमषा, १०-धात्री, ११-कलना, १२-कालार्कषिणी, १३-भ्रामिका, १४-मन्दगमा, १५-भोगस्था एवं १६-भाविका।

यह तीव्र साधना विशेष उद्देश्य की पूर्ति हेतु की जानी चाहिए, ऊपर लिखे जो चार दोष हैं, उनके निवारण हेतु विशेष संकल्प लेकर यह प्रयोग करना चाहिए।

कई सामान्य साधक जिन्हें पूजन विधि का पूर्ण ज्ञान नहीं होता, उनसे साधना में गलतियां हो सकती हैं, अतः शास्त्रों में विधान है, कि यदि पहले गुरु पूजन कर साधना की जाय, तो कोई भी साधनात्मक दोष नहीं रहता।

बगलामुखी साधना किसी भी रविवार को प्रातः प्रारम्भ करें, विस्तृत साधना के तीन खण्ड हैं, इसमें प्रातः काल, मध्याह्न काल, तथा सायंकाल की साधना का विशेष क्रम है, और इस तांत्रोक्त साधना को इसी रूप में सम्पन्न करने से पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है।

प्रातःकालीन क्रम

साधक स्नान कर शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण कर अपने पूजा स्थान में बैठे और शिव स्वरूप गुरु का ध्यान करे, यहां यह बात प्रमुख है, कि आप अपने मस्तक सहस्रार चक्र में गुरु को स्थापित कर रहे हैं।

गुरु ध्यान

श्वेतं श्वेतविलेपमाल्यवसनं वामेन रक्तोत्पलं
विभ्रत्या प्रिययेतरेण तरसा श्लिष्टं प्रसन्नाननम् ।
हस्ताभ्यामभयं वरं च दधतं शम्भुस्वरूपं परं
हालालोहितलोचनोत्पलयुगं ध्यायेच्छिरःस्थं गुरुम् ।।

अर्थात्, "मस्तक ब्रह्मरन्ध्र के सहस्रार चक्र में, मेरे गुरु के देवता भगवान शिव विराजमान हैं; उनकी अंग कन्ति श्वेत है, श्वेत अनुलेपन, श्वेत वस्त्र और श्वेत पुष्प माला धारण किये हैं, दोनों हाथ अभय और वर की मुद्राओं से सुशोभित हैं, मुख पर सहज प्रसन्नता है, नेत्र हमारे दुःख रूपी विष का पान करने से लाल हैं, ऐसे सद्गुरु देव को मैं बार-बार ध्यान करता ।"

अब साधक अपने सामने एक पात्र में **गुरु पादुका** स्थापित करें, गुरु पादुकाओं पर चन्दन और पुष्प अर्पित करें तथा अपने दोनों हाथ जोड़ कर गुरु पादुका मन्त्र का दस बार जप करें—

गुरु पादुका मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह् ख्फ्रें ह स क्ष म ल व र यूं स ह क्ष म ल वर यीं ह् सौं स्हौं श्रीनिखिलेश्वरानन्द श्रीनाथपादुकां पूजयामि ।।

अब अपने हाथ में जल लेकर निम्न मन्त्र से आगे की जाने वाली साधना जप का समर्पण करें—

जप समर्पण मन्त्र

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात् सुरेश्वर ।।

अर्थात्, "देव ! सुरेश्वर !! आप गोपनीय से भी अति गोपनीय वस्तु के गोप्ता (संरक्षक) हैं, हमारे द्वारा किये गये इस जप को ग्रहण करें, प्रभो ! आपकी कृपा से मुझे सिद्धि प्राप्त हो ।"

जप समर्पण के पश्चात् यह चिन्तन करें कि गुरुदेव के चरणारविन्दों से अमृत की धारा झर रही है, और उसमें मैं आपादमस्तक निमग्न हो गया हूं ।

अब देवी की मूल पूजा का क्रम प्रारम्भ होता है, अपने सामने ताम्र पात्र में **विशिष्ट मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त बगलामुखी यन्त्र** स्थापित करें, और अपने हाथ में जल लेकर निम्न संकल्प कर विनियोग करें—

संकल्प मन्त्र

ॐ अस्य श्रीबगलामुखी महामन्त्रस्य नारद ऋषिः वृहतीश्छन्दः श्रीबगलामुखी देवता ह्लीं बीजं स्वाहा शक्तिः मम सकलकामनासिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

अब यन्त्र-पूजन, पुष्प, कुंकुम, रक्त चन्दन, अबीर, गुलाल, मौली से सम्पन्न करें, देवी के समक्ष नैवेद्य अर्पित करें ।

अब देवी की सोलह शक्तियों का पूजन प्रारम्भ होता है, इस हेतु निम्न एक-एक मन्त्र पढ़ते हुए सोलह बगलामुखी शक्तियों की स्थापना स्वरूप **सोलह बगलामुखी शक्ति चक्र** अपने सामने यन्त्र के बाहर एक वृत्त रूप में (गोल घेरे में) स्थापित करें—

ॐ मंगलायै नमः ॐ बलकायै नमः
ॐ कालाकर्षिण्यै नमः ॐ स्तम्भिन्यै नमः
ॐ भूधरायै नमः ॐ भ्रामिकायै नमः
ॐ जृम्भिण्यै नमः ॐ कल्मषायै नमः
ॐ मन्दगमनायै नमः ॐ मोहिन्यै नमः
ॐ धात्र्यै नमः ॐ भोगस्थायै नमः
ॐ वश्यायै नमः ॐ कलनायै नमः
ॐ भाविकायै नमः ॐ चलायै नमः

प्रत्येक देवी शक्ति के आगे सुपारी रखें और अक्षत तथा सिन्दूर अर्पित करें ।

जैसा कि पूर्व में लिखा है, बगलामुखी देवी का पूजन तीन क्रम में प्रातः मध्याह्न एवं सायंकाल करना है।

प्रातःकालीन ध्यान

गम्भीरां च मदोन्मत्तां स्वर्णकान्तिसमप्रभाम्।
चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासनसंस्थिताम्॥
मुग्दरं दक्षिणे पाशं वामे जिह्वां च वज्रकम्।
पीताम्बरधरां सान्द्रदृढपीनपयोधराम्॥
पीतभूषणभूषांगीं धृतचन्द्रार्धशेखराम्।
रत्नसिंहासनासीनामम्बां त्रैलोक्यसुन्दरीम्॥

मैं त्रिभुवन सुन्दरी माता बगलामुखी को जो रत्न सिंहासन पर कमल के आसन पर विराजमान है, गंभीर स्वभाव एवं मुख पर तीव्रता है, तीन नेत्र और चार भुजाओं वाली देवी बगलामुखी दाहिने भाग के दो हाथों में मुग्दर और पाश वाम भाग के दो हाथों में जिह्वा एवं वज्र लिये हुए है, मस्तक पर अर्द्ध चन्द्राकार मुकुट है, मैं भक्तों पर कृपा करने वाली ऐसी देवी बगलामुखी को अपनी सम्पूर्ण भक्ति से प्रणाम करता हूं!!

ध्यान मन्त्र का ग्यारह बार जप कर **पीताम्बरा शक्ति माला** से एक माला बगलामुखी गायत्री का जप करें—

बगला गायत्री मन्त्र

ॐ ह्लीं ब्रह्मास्त्रायै विद्महे। स्तम्भनबाणायै धीमहि। तन्नो बगला प्रचोदयात्॥

अब इसी माला से बगला के मूल मन्त्र का जप सम्पन्न करें, यहां यह आवश्यक है, कि प्रातःकालीन क्रम में जितनी माला का जप करें, मध्याह्न क्रम तथा सायंकालीन क्रम में भी उतनी ही माला का जप करना आवश्यक है, साधकों को चाहिए, कि पांच माला मन्त्र जप प्रत्येक क्रम में अवश्य सम्पन्न करें।

बगलामुखी मन्त्र

ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ॥

मध्याह्न साधना क्रम

इस क्रम में सबसे पहले मध्याह्न ध्यान मन्त्र का ग्यारह बार जप करें, फिर एक माला बगला गायत्री मन्त्र, शक्ति पूजन तथा बगलामुखी मन्त्र की पांच माला का जप करें।

मध्याह्न ध्यान मन्त्र

दुष्टस्तम्भनमुग्रविघ्नशमनं दारिद्र्यविच्छेदनं
भूमद्धीशमनं चलन्मृगदृशां चेतः समाकर्षणम्।
सौभाग्यैकनिकेतन मम दृशोः कारुण्यपूर्णेक्षणे
शत्रोर्मारणमाविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः॥

करुणापूर्ण नेत्रों वाली माता बगलामुखी मेरे समक्ष आपका वह स्वरूप प्रगट हो जो शत्रुओं का मारण, दुष्टों का स्तम्भन, भयंकर विघ्नों का निवारण, दरिद्रता का विनाश, राजभय का शमन करने वाला है, मेरे नेत्रों के लिए सौभाग्य का एक मात्र निकेतन है, तुम्हारे चरणों में सादर प्रणाम!!

सायंकालीन साधना क्रम

इस क्रम में सबसे पहले सायंकालीन ध्यान मन्त्र का ग्यारह बार जप करें, फिर एक माला बगला गायत्री मन्त्र, शक्ति पूजन तथा बगलामुखी मन्त्र की पांच माला का जप करें—

सायंकालीन ध्यान

मातर्भंजय मद्विपक्षवदनं जिह्वाचलं कीलय
ब्राह्मीं मुद्रय मुद्रयाशु धिषणामग्रे गतिं स्तम्भय।
शत्रूं चूर्णय चूर्णयाशु गदया गौरांगि पीताम्बरे
विघ्नौघं बगले हर प्रणमतां कारुण्यपूर्णेक्षणे॥

(शेष भाग पृष्ठ संख्या २० पर)

वेदोक्त विद्याएं तो अद्‌भुत हैं

वेद उपनिषदों का सार

दहर, दीर्घायुष्य, और मन्थ विद्या

गुरु वचनों से साभार

वेदोक्त काल में व्यक्ति अपने सम्पूर्ण चिन्तन को परब्रह्म के चिन्तन से जोड़ता था, और उसका समर्पण भाव अपने गुरु के प्रति तीव्र रहता था, महान गुरुओं ने अपने शिष्यों को अपनी तपस्या के बल पर कुछ विशिष्ट विद्याओं की रचनाएं दीं, ये विद्याएं जीवन से सम्बन्धित और जीवन को उच्च बना कर, श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम बना कर कुण्डलिनी जागरण कर ब्रह्मत्व से साक्षात् करने की विद्याएं हैं ।

धर्म की तीन मुख्य शाखाएं हैं, यज्ञ, अध्ययन, और दान, छान्दोग्योपनिषद् में लिखा है, "धर्मस्यत्रय:, स्कन्धा:, यज्ञाध्ययनन्दानम्" अर्थात् जीवन रूपी यज्ञ, भक्ति और तपस्या है, दान कर्म है, और अध्ययन ज्ञान है, ज्ञान के बिना कोई काम नहीं होता, जो ज्ञान भक्ति और कर्म का सहायक हो, और इन दोनों के योग बल से उत्पन्न होता हो, वह कार्य है, केवल ग्रन्थ रूप में बिना अध्ययन के, ज्ञान के, जो कार्य होता है, वह जीवन को श्रेष्ठ नहीं बना सकता, और जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए विशेष विद्या की इच्छा और कर्म करने की इच्छा निरन्तर बननी चाहिए ।

उपनिषदों में दस महान विद्याओं के सम्बन्ध में बार-बार विवरण आया है, और लिखा है, कि इन दसों विद्याओं में पूर्णता प्राप्त कर लेने वाला व्यक्ति तो स्वयं साक्षात् परब्रह्म स्वरूप हो जाता है, स्पष्ट कहा जाय तो वर्तमान युग में दसों विद्याओं का सम्पूर्ण ज्ञान होना योगी के लिए संभव भी नहीं है, लेकिन यदि ज्ञान प्राप्ति के लिए एक कदम भी आगे बढ़ाते हैं, तो जीवन की जड़ता समाप्त हो सकती है, श्रेष्ठता का विकास हो सकता है।

इन महान विद्याओं में प्रमुख हैं—१-दहर विद्या, २-उप-कौशल आत्म विद्या, ३-भूम विद्या, ४-मधु विद्या, ५-पंचाग्नि विद्या, ६-दीर्घायुष्य विद्या, ७-शाण्डिल्य विद्या, ८-उग्दीथ विद्या, ६-संवर्ग विद्या, १०-मन्थ विद्या।

१- दहर विद्या

'दहर' का तात्पर्य है कमल, और यह दहर शरीर के भीतर स्थित है, और जब व्यक्ति अपने **'दहर'** से साक्षात्कार कर लेता है, तो वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है, उसकी कुण्डलिनी जागृत हो जाती है, इसी विद्या को **'दहर विद्या'** कहते हैं और यह विद्या चिरस्थायी विद्या है, इसके लिए जो प्रयत्न किया जाता है, उसमें चार प्रमुख पद हैं—१-गुरु आश्रय लेना, २-गुरु उपदेशों को सुनना, ३-गुरु उपदेशों का मनन करना, ४-उसके अनुसार ध्यान, साधना, उपासना करना।

यह पुरुषार्थ की साधना है, और इसमें अपने भीतर ही खोजने की साधना है, अपने मूलतत्व को पहिचानने की साधना है, अपने गुणों के विकास की साधना है, और अपने अवगुणों के नाश की साधना है।

साधना क्रम

इसमें मूल रूप से पहले गुरु साधना सम्पन्न की जाती है, और इस साधना को नियमित रूप से सम्पन्न कर उसे अपने जीवन का एक अंग बना लें और सप्ताह में एक दिन अपनी इच्छानुसार निश्चित कर अपने पूजा, आराधना कक्ष में **गुरु चक्र** तथा **दहर चक्र** स्थापित करें और दोनों चक्रों पर केवल चन्दन लगाएं, स्वयं के चन्दन से तिलक कर ध्यान मुद्रा में बैठ कर निम्न दहर मन्त्र का जप करें—

ये वेदोक्त दस महा साधनाएं—१-दहर विद्या, २-उप-कौशल आत्म विद्या, ३-भूम विद्या, ४-मधु-विद्या, ५-पंचाग्नि विद्या, ६-दीर्घायुष्य विद्या, ७-शाण्डिल्य विद्या, ८-उग्दीथ विद्या, ६-संवर्ग विद्या, १०-मन्थ विद्या, आदि सिद्ध करने वाला तो परमहंस योगी बन जाता है, साक्षात् ब्रह्म स्वरूप।

आत्मापहतपाप्मा विजरो विमृत्युर्विशोको विजिघत्सो पिपासः सत्यकामः सत्यसंकल्पः इहात्मानमनुविद्य व्रजन्त्येतांश्च सत्यान् कामांस्तेषां सर्वेषु लोकेषु कामचारो य कामं कामयते साऽस्य संकल्पादेव समुत्तिष्ठति तेन सम्पन्नो महीयते यावान् वा अयमाकाशस्तावानेषोऽन्तर्हृदय आकाशः॥

इस मन्त्र जप की साधक को एक निश्चित संख्या तय कर लेनी चाहिए, और प्रति सप्ताह निश्चित दिन इस निश्चित मन्त्र संख्या का जप करें, जप के दौरान यह ध्यान, यह भावना रहनी चाहिए, कि मेरे भीतर कुण्डलिनी तत्व, आकाश तत्व है, और मैं इस आकाश तत्व का विस्तार कर रहा हूं।

इस प्रकार धीरे-धीरे साधक अपने भीतर एक ज्ञान तत्व प्रगट करता है, और यही ज्ञान तत्व उसके जीवन में आकाश के समान विशालता भर देता है।

२-दीर्घायुष्य विद्या

ज्ञानी और सिद्धि प्राप्त साधक अपनी इच्छानुसार मृत्यु का वरण करते हैं, अपने जीवन को वे सम्पूर्ण रूप से ईश्वर द्वारा प्रदत्त उपहार मान कर उसका सदुपयोग कर दीर्घायु प्राप्त करते हैं

और इस दीर्घायु में विशेष बात यह है, कि शरीर पूर्णतः निरोग एवं इन्द्रियां स्वस्थ रहनी चाहिए, इसी विद्या को उपनिषदों में **दीर्घायुष्य विद्या** कहा गया है।

इस साधना में ब्रह्मचर्य पालन पर विशेष जोर दिया गया है, और ब्रह्मचर्य का तात्पर्य है अपने आप पर नियन्त्रण, शरीर की सभी इन्द्रियों पर आप नियन्त्रण कर लेते हैं, अपनी इच्छानुसार चलाते हैं तो यह ब्रह्मचर्य है, संयमित जीवन इस साधना के लिए विशेष आवश्यक है।

यह साधना साधक प्रतिदिन अपनी पूजा में अवश्य ही शामिल करें, इस साधना में प्राण शक्ति, ज्ञान शक्ति और मनः-शक्ति को जागृत किया जाता है, अपने पूजा स्थान में इष्ट देवता का पूजन कर **"सर्वाभीष्ट विनियुक्त"** एक पात्र में स्थापित कर उस पर मन्त्र उच्चारण करते हुए जल चढ़ाएं, सर्वप्रथम अपनी प्राण-शक्ति, ज्ञान-शक्ति, मनः-शक्ति का ध्यान करते हुए निम्न मन्त्रों का क्रमशः तीन बार उच्चारण करें, **'सर्वाभीष्ट विनियुक्त'** साधक का स्वयं का एक लघु स्वरूप है, और उसकी चैतन्यता साधक की शक्ति एवं आयु में वृद्धि करती है।

मन्त्र

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हों ॐ क्षं सं हंसः ह्रीं ॐ हंसः मम प्राणः इह प्राणः।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हों ॐ क्षं सं हंसः ह्रीं ॐ हंसः मम जीव इह स्थितः।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हों ॐ क्षं सं हंसः ह्रीं ॐ हंसः मम सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हों ॐ क्षं सं हंसः ह्रीं ॐ हंसः मम वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रघ्राणप्राणा इहागत्यस सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॐ क्षं सं हंसः ह्रीं ॐ।

अब साधक "आरोग्य माला" से प्रतिदिन एक माला मन्त्र जप दीर्घायुष्य प्राण प्रतिष्ठा मन्त्र का जप अवश्य करें—

मन्त्र

॥ ॐ क्षं सं हंसः ह्रीं ॐ ॥

इस प्रकार अनुष्ठान सम्पन्न कर वह अपने दैनिक कर्म सम्पन्न करे, यह साधना अत्यन्त सात्विक साधना है, और हम अपने जो पूर्व ग्रन्थों में ऋषियों की दीर्घायु के सम्बन्ध में वर्णन पढ़ते हैं वह निश्चय ही दीर्घायुष्य साधना का फल है।

३-मन्थ विद्या

मन्थाख्य कर्म से तात्पर्य है, धन प्राप्ति कर्म, जब साधक पूर्ण सिद्धि प्राप्त कर लेता है, तो उसके लिए धन की आवश्यकता समाप्त हो जाती है, लेकिन साधना अवस्था में और जीवन के अन्य कर्त्तव्यों के निर्वाह हेतु धन की आवश्यकता अवश्य पड़ती है और इस मन्थाख्या कर्म के महत्व को **बृहदारण्यकोपनिषद** में विस्तार से स्पष्ट किया है अतः धन की साधना करने में न तो कोई दोष है, और न ही श्रेष्ठ साधक अपनी साधना से विचलित हो सकता है, यह साधना साधक प्रत्येक शुक्रवार को नियमित रूप से ग्यारह शुक्रवार तक सम्पन्न करे, इसमें **मन्थाख्या मूर्ति** और **कुशकंडिका क्रियात्मा** आवश्यक है ये दोनों ही विशेष साधना वस्तुएं पूर्णतः प्राण प्रतिष्ठा युक्त होनी चाहिए, चैतन्य होनी चाहिए, तभी सामान्य साधक अपने, अनुष्ठान में सफलता प्राप्त कर सकता है।

साधना के दिन साधक केवल दूध ही ग्रहण करे अन्य भोजन वर्जित है, अपने सामने एक बड़े पात्र में **मन्थाख्या मूर्ति, कुशकंडिका क्रियात्मा** स्थापित कर दोनों और

एक-एक दीपक जला दे, तथा अपने हाथ में जल ले कर संकल्प करे—

"हे अग्नि स्वरूप मन्थाख्य देव ! सब देवता मेरे विपरीत हो कर मेरी सफलताओं को नष्ट कर देते हैं, मैं उन सभी देवताओं की तृप्ति हेतु मन्त्र आहुति देता हूं ।"

फिर दसों दिशाओं में निम्नलिखित मन्त्रों से अग्नि की दस कलाओं का पूजन करें—

ॐ यं धूम्रार्चिषे नमः
ॐ रं ऊष्मायै नमः
ॐ लं ज्वलिन्यै नमः
ॐ वं ज्वालिन्यै नमः
ॐ शं विस्फुर्लिंगिन्यै नमः
ॐ षं सुश्रियै नमः
ॐ सं स्वरूपायै नमः
ॐ हं कपिलायै नमः
ॐ लं हव्यवाहायै नमः
ॐ वं स्फुरण्यै नमः

इस प्रकार अग्नि कलाओं का ध्यान कर निम्नलिखित मन्त्र का जप करते हुए चावल तथा कुंकुम मन्थाख्य मूर्ति के आगे अर्पित करें—

मन्त्र

।। ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं कएलई ह्रीं हस कहल ह्रीं सकल ह्रीं सौः ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं ।।

इस प्रकार १०१ मन्त्र का जप कर साधक लक्ष्मी आरती सम्पन्न करे ।

इस प्रकार यदि ११ शुक्रवार तक नियमित अनुष्ठान सम्पन्न किया जाय तो साधक के लिए जीवन भर लक्ष्मी प्राप्ति का नया मार्ग प्राप्त होता रहता है और धन की कमी से उसके कोई भी कार्य नहीं रुकते ।

उपनिषदों में वर्णित इन विशिष्ट साधनाओं की जानकारी प्रत्येक साधक के लिए आवश्यक है, क्योंकि यह वेदोक्त साधनाएं सात्विक साधनाएं है, अपने भीतर की कुण्डलिनी शक्ति जागृत करने की साधनाएं हैं, अपने आपको परमात्मा से जोड़ने की साधनाएं हैं, जिससे साधक अपने जीवन को अपनी शक्ति द्वारा तीव्र रूप से प्रकाशित कर सके । ●

(पृष्ठ संख्या १६ का शेष भाग)

करुणा भरे नेत्रों वाली, पीताम्बरा माता बगलामुखी मेरे शत्रु पक्ष का मुखभंजन कर दो, उनकी वाणी और बुद्धि को कुंठित कर दो, शत्रु वर्ग की उन्नति प्रगति को रोक दो, तथा मेरे उन शत्रुओं को अपने गदा से चूर-चूर कर दो, हे माता ! तुम इस भक्त के समस्त विघ्नों का हरण कर लो ।

इस प्रकार साधक त्रिकाल पीताम्बरा शक्ति साधना सम्पन्न कर अपने सारे जप को देवी को समर्पित कर दें और अपने कार्य में सिद्धि हेतु प्रार्थना करें ।

समर्पण मन्त्र

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात् सुरेश्वरि ।।

बगलामुखी साधना का प्रभाव साधक को अवश्य प्राप्त होता है, और मैंने अपने अनुभव में यह पाया है कि बड़े से बड़ा संकट हो जाय और साधक स्नान कर एक माला बगलामुखी मन्त्र का जप कर ले तो उसे समस्या, के संकट के हल हेतु मार्ग प्राप्त हो जाता है ।

ऊपर जो साधना विवरण दिया गया है, यदि साधक तीन रविवार तक इसी क्रम में साधना सम्पन्न कर ले तो उसे बगलामुखी सिद्धि पूर्ण रूप से प्राप्त हो जाती है, जिस प्रकार अग्नि का स्पर्श होते ही कपूर जल जाता है, उसी प्रकार जहां बगलामुखी पीताम्बरा की स्थापना होती है, उस साधक के जीवन से शत्रु दोष, भय दोष, राज्य बाधा दोष, तिरस्कार दोष, कलह दोष भस्म हो जाते हैं । ●

ग्रहों का दुष्प्रभाव है

तो कीजिये

ग्रह बाधा निवारण अनुष्ठान

इसमें कोई दो राय नहीं कि मानव के जीवन और भाग्य पर ग्रहों का बराबर प्रभाव रहता है, कई बार तो ऐसा होता है कि हम प्रयत्न करते हैं और जब सफलता दो चार हाथ दूर रह जाती है, तो सारा किया कराया काम बिगड़ जाता है, हमने अपने जीवन में कई बार यह अनुभव किया होगा कि प्रयत्न करने पर भी व्यापार में सफलता नहीं मिल पा रही है, या जिस प्रकार से बिक्री बढ़नी चाहिये उस प्रकार से नहीं बढ़ रही है, अथवा घर में जो सुख-शान्ति होनी चाहिये वह नहीं हो पा रही हैं।

इसके अलावा भी कई छोटी-मोटी समस्याएं हैं, जिनसे मानव व्यथित रहता है और प्रयत्न करने पर भी सफलता नहीं मिल पाती, इन कार्यों की सिद्धि और सफलता के लिए कई छोटे-मोटे टोटके, कई छोटे-मोटे अनुष्ठान और प्रयोग करने पर भी जो अनुकूल फल प्राप्त होना चाहिए वह प्राप्त नहीं हो पाता, तब देवताओं पर से हमारा विश्वास उठ जाता है, साधना से जी भर जाता है, और मन में ऐसा आता है कि शायद यह सब कुछ व्यर्थ है।

परन्तु इसके मूल कारण में 'ग्रह बाधा' होती है, ज्योतिष का तो पूरा आधार ही ग्रह है, यों तो आकाश में सैकड़ों ग्रह हैं, परन्तु मुख्यतः नौ ग्रह ही ऐसे हैं, जिनका प्रभाव जाने अनजाने, चाहे-अनचाहे हमारे ऊपर पड़ता ही रहता है, और इन ग्रहों के प्रभाव से हमें अपने जीवन में सफलता-असफलता मिलती रहती है।

इसीलिए तो कहा गया है कि जब चारों ओर से आदमी थक जाय और किसी उपाय से समस्या का समाधान दिखाई नहीं दे, या कई बार प्रयत्न करने पर भी अनुकूल फल प्रतीत नहीं हो, तब अवश्य ही समझ लेना चाहिए कि यह सब कुछ ग्रह बाधा की वजह से ही हो रहा है।

यों तो नौ ग्रहों में से कुछ ग्रह अनुकूल चलते रहते हैं, तो कुछ ग्रह विपरीत भी होते हैं, इसलिए किसी एक ग्रह

के दोष निवारण की अपेक्षा **ग्रह बाधा दोष निवारण प्रयोग अनुष्ठान** सम्पन्न किया जाय तो साधक के समस्त ग्रह अपने आप ही अनुकूल हो जाते हैं, और हम यह अनुभव करने लगते हैं, कि जो काम हो नहीं रहा था या जिस कार्य में बराबर बाधाएं और अड़चनें आ रही थीं, वह कार्य सम्पन्न होने लगा है, और जो बाधाएं आ रही थीं वह कम या समाप्त ह गयी हैं।

ज्योतिष के आधार पर इन ग्रहों के जो स्वामी हैं, उनकी साधना आराधना करने पर अपने जीवन में उनका प्रभाव अनुकूल होने लगता है, इन ग्रहों के स्वामी निम्न प्रकार से हैं—

मेषवृश्चिकयोर्भौम: शुक्रो वृषतुलाधिप: ।
बुध: कन्यामिथुनयो: प्रोक्त: कर्कस्य चन्द्रमा: ।।
सिंहस्याधिपति: सूर्यो गुरुश्च धनुमीनयो: ।
मकरकुम्भाधिपो मन्द एते राशयापति: ।।

अर्थात् मेष-वृश्चिक का स्वामी मंगल, वृष-तुला का शुक्र, कन्या-मिथुन का बुध, कर्क का चन्द्रमा, सिंह का सूर्य, धनु-मीन का गुरु और मकर-कुम्भ का स्वामी शनि को माना गया है।

यह मेरे जीवन का अनुभव है, कि मैंने अपने जीवन में जब भी बाधाएं अनुभव कीं या अन्य अनुष्ठान सम्पन्न करने पर भी अनुकूल फल प्रतीत नहीं हुए तब मैंने इसी उपाय और अनुष्ठान का सहारा लिया और मुझे तुरन्त अनुकूल परिणाम प्राप्त हो गये।

एक बार तो एक विशेष प्रकार की साधना को सिद्ध करने के लिए छ: बार प्रयत्न और प्रयोग किये पर प्रत्येक बार असफलता ही हाथ लगी, जब मैंने अपने गुरु से इसकी चर्चा की तो उन्होंने मुझे इस प्रयोग को बताया था, और कहा था कि तुम्हें पहले ग्रह बाधा निवारण प्रयोग सम्पन्न कर लेना चाहिए, जिससे कि ग्रहों का विपरीत परिणाम भोगना न पड़े और आश्चर्य की बात यह है कि ऐसा अनुष्ठान करने के बाद जब मैंने मूल प्रयोग किया तो पहली ही बार में सफलता मिल गयी।

अनुष्ठान समय

इस अनुष्ठान को किसी भी दिन किया जा सकता है, जिस दिन चन्द्रमा और नक्षत्र अनुकूल हों, या जिस दिन हृदय में प्रसन्नता हो, उसी दिन इस अनुष्ठान को कर लेना चाहिए, या कोई विशेष ग्रह बाधा दे रहा हो, तो उस विशेष ग्रह के दिन इस प्रयोग को सम्पन्न करना चाहिए।

ग्रहों से सम्बन्धित प्रयोग करते समय उस ग्रह के प्रिय रंग वाले वस्त्र धारण करें और वैसे ही पुष्प अर्पित करें, ग्रह पूजा के साथ-साथ दान करने का भी विधान है, नीचे मैं इससे सम्बन्धित विवरण दे रहा हूं—

क्र०सं०	ग्रह	दान	रंग	जप संख्या
१-	सूर्य	तांबा	गुलाबी	६०००
२-	चन्द्र	कांसा	सफेद	१०,०००
३-	मंगल	तांबा	लाल	७,०००
४-	बुध	पीतल	हरा	१७,०००
५-	गुरु	सोना	पीला	१८,०००
६-	शुक्र	तुला	सफेद	२०,०००
७-	शनि	लोहा	काला	१८,०००
८-	राहु	शीशा	काला	१८,०००
९-	केतु	खप्पर	काला	१८,०००

इसके अलावा सूर्य का रत्न—माणिक्य, चन्द्रमा का रत्न-मोती, मंगल का रत्न—मूंगा, बुध का रत्न—पन्ना, गुरु का रत्न—पुखराज, शुक्र का रत्न-गोमेद, शनि का रत्न—नीलम, राहु का रत्न—गोमेद और केतु का रत्न—लहसुनिया होता है, यदि सम्भव हो, तो इन रत्नों का भी दान करना चाहिए।

इसके साथ ही साथ मैंने ग्रहों से सम्बंधित जप संख्या बताई है, अब मैं प्रत्येक ग्रह का मूल मन्त्र स्पष्ट कर रहा हूं, जिनका जप करने से वह ग्रह पूर्णतः अनुकूल होता है।

नव ग्रह एवं उनसे सम्बन्धित मूल मन्त्र

१-	सूर्य	ॐ ह्रां ह्रीं सः
२-	चन्द्रमा	ॐ घौं स्रौं सः
३-	मंगल	ॐ ह्रां ह्रीं सः
४-	बुध	ॐ ह्रौं ह्रौं ह्रां सः
५-	गुरु	ॐ त्रौं त्रौं त्रौं सः
६-	शुक्र	ॐ ह्रौं ह्रीं सः
७-	शनि	ॐ शौं शौं सः
८-	राहु	ॐ छौं छां छौं सः
९-	केतु	ॐ फौं फां फौं सः

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तो इसका दसवां हिस्सा मन्त्र से घी और शहद मिला कर होम करना चाहिए, बाद में ब्राह्मण को भोजन करा कर उन्हें यथा-शक्ति दान दक्षिणा दे कर इस अनुष्ठान को सम्पन्न करना चाहिए।

इसके अलावा मेरे गुरुदेव ने एक अत्यन्त ही गोपनीय ग्रह कवच स्तोत्र बताया था यदि यह अनुष्ठान सम्पन्न न हो सके तो केवल नित्य पांच बार या ग्यारह बार ग्रह कवच स्तोत्र का पाठ कर लिया जाय, तो पूरे जीवन में किसी भी प्रकार की ग्रह बाधा व्याप्त नहीं होती।

इसके लिए **"नवग्रह कवच यन्त्र"** अपने पूजा स्थान में स्थापित कर लेना चाहिए इसमें सभी ग्रहों के मन्त्रों से यह यन्त्र सिद्ध होता है और पूरे जीवन भर के लिए उपयोगी होता है, ग्रह दोष निवारण हेतु तैयार किये जाने वाले इस यन्त्र की प्राण प्रतिष्ठा में एक विशेष अनुष्ठान सम्पन्न किया जाता है, जिससे यन्त्र में स्थित प्रत्येक ग्रह अपने पूर्ण प्रभाव के साथ प्राण प्रतिष्ठित रहते हैं।

अपने पूजा स्थान में किसी पात्र में इस दुर्लभ ग्रह कवच यन्त्र को स्थापित कर जल से स्नान करा कर पोंछ कर कुंकुम, केसर से तिलक करें, सम्भव हो तो पुष्प चढ़ावें और सामने अगरबत्ती प्रज्वलित करें, इसके बाद निम्न ग्रह कवच स्तोत्र का मात्र पांच बार पाठ करें।

ऐसा करने पर वह दिन तो मंगलमय होता ही है, सभी प्रकार के ग्रह दोष समाप्त हो कर जीवन में निरन्तर उन्नति के द्वार खुलते रहते हैं।

कवच के इस पाठ से शत्रु समाप्त होते हैं, रोग दूर हो जाते हैं, और व्यापार, धन आदि में निरन्तर वृद्धि होती रहती है, इसके अलावा आकस्मिक संकट से तो निश्चय ही मुक्ति मिलती है।

विनियोग

ॐ अस्य जगन्मंगल-कारक ग्रह कवचस्य श्री भैरव ऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। श्री सूर्यादि ग्रहा देवता। सर्व कामार्थ संसिद्धये जपे विनियोगः॥

नजर उतारने का मन्त्र

कई बार छोटे बच्चों या सुन्दर स्त्रियों को नजर लग जाती है, तब निम्न मन्त्र पढ़ कर मोर पंख या लोहे की सलाई से झाड़ दें तो उसकी नजर दूर हो जाती है, इस मन्त्र को सिद्ध करने की जरूरत नहीं है—

ॐ नमो आदेश गुरु का गिरह बाज नटनी का जाया, चलती बेर कबूतर खाया, पीवे दारू खाय जो मांस रोग दोष को लावे फांस, कहां कहां से लावेगा गुद गुद में सुद्रावेगा बोटी बोटी में से लावेगा चामचाम में से लावेगा, नौ नाड़ी बहत्तर कोठा में से लावेगा, मार मार बन्दी करकर लावेगा, न लावेगा, तो अपनो माता की सेज पर पग रखेगा, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा॥

पार्वत्युवाच

श्री शान ! सर्व शास्त्रज्ञ देवताधीश्वर प्रभो ।
अक्षय कवचं दिव्यं ग्रहादि-देवतं विभो ।
पुरा संसूचितं गुह्यं सुभवताक्षय-कारकम् ।
कृपामयि तवास्ते चेत् कथय श्री महेश्वर ।

शिव उवाच

श्रृणु देवी प्रियतमे ! कवचं दैव दुर्लभम् ।
यद्घृत्वा देवताः सर्वे अमराः स्युर्वरानने ।
तव प्रीति-वशात्वच्मि न देयं यस्य कस्यचित् ।

मूल ग्रह कवच स्तोत्र

ॐ ह्रां ह्रीं सः मे शिरः पातु श्री सूर्य ग्रहपतिः । ॐ धौं सौं औं मे मुखं पातु श्री चन्द्रो ग्रह राजकः । ॐ ह्रां ह्रीं ह्रां सः करो पातु ग्रह-सेनापतिः कुजः । पायादथ ॐ ह्रौं ह्रां सः पादोज्ञो नृपबालकः । ॐ त्रौं त्रौं त्रौं सः कटि पातु मायादमर पूजितः । ॐ ह्रौं ह्रीं सौः दैत्य पूज्यो हृदयं परिरक्षतु । ॐ शौं शौं सः पातु नाभिं मे ग्रह-प्रेष्यं शनैश्चरः । ॐ छौं छां छौं सः कण्ठदेशं श्री राहुदेव मर्दक । ॐ फौं फां फौं सः शिखी पातु सर्वांगमभितोऽवतु । ग्रहाश्चैते भोग-देहा नित्यास्तु स्फुटित ग्रहाः । एतदशांश-सम्भूताः पान्तु नित्यं तु दुर्जनात् । अक्षयं कवचं पुण्यं सूर्यादि ग्रह-देवतम् पठेद् वा पाठयेद् वापि धारयेद् यो जनः शुचि । स सिद्धि प्राप्नुयादिष्टां दुर्लभां त्रिदशेस्तुयाम् । तव स्नेह-वशादुक्तं जगन्मंगल कारकम् ग्रह-यन्त्रान्वितं कृत्वाभीष्टमक्षायमाप्नुयात् ।।

ग्रहों की गति और जीवन गति में अद्‌भुत साम्य है, पल-पल के जीवन पर ग्रहों का प्रभाव पड़ता है, और नव ग्रह कवच स्तोत्र को सभी ग्रहों की बाधाएं दूर करने का सरलतम उपाय है। ●

ज्ञानामृत

धैर्ययस्य पिता, क्षमा च जननी, शान्तिश्चिरं गेहिनी ।
सत्यं सुनुरयं, दया च भगिनी, भ्राता मनः संयमः ।।
शय्या भूमितलं, दिशोऽपि वसनं ज्ञानामृतं भोजनं ।
एते यस्य कुटुम्बिनो वद सखे ! कस्माद् भयं योगिनः ।।

जिसका पिता धैर्य हो, मां क्षमा हो, पत्नी रूप में शान्ति हो, सत्य जिसका साथी, दया जिसकी बहिन हो, मन का संयम ही जिनका भाई हो, पूरी पृथ्वी जिसकी शैय्या हो, दशों दिशाएं जिसके पहिनने के वस्त्र हों, तथा ज्ञानरूपी अमृत ही जिसका भोजन हो, जिसके ऐसा समृद्ध कुटुम्ब हो, उस योगी को इस पृथ्वी पर क्या भय हो सकता है ?

स्तब्धस्य नश्यति यशो विषमस्य मैत्री
नेष्टेन्द्रियस्य कुलमर्थं परस्य धर्मः ।
विद्याफलं व्यसनिनः कृपणस्य सौख्यं
राज्यं प्रमत्त सचिवस्य नराधिपस्य ।।

अकर्मण्य अथवा आलसी मनुष्य का यश नष्ट हो जाता है, विषम स्वभाव वाले से मित्रता नष्ट हो जाती है, धन के लोभी का धर्म नष्ट हो जाता है, व्यसनों में फंसने वाले की विद्या नष्ट हो जाती है, कंजूस का सुख नष्ट हो जाता है, मतवाले मन्त्री युक्त राजा का राज्य नष्ट हो जाता है।

शोको नाशयते धैर्य, शोको नाशयते श्रुतम् ।
शोको नाशयते सर्वं नास्ति शोक समोरिपुः ।।

शोक (चिन्ता) धैर्य को नष्ट कर देता है, शोक पढ़ी लिखी विद्या को नष्ट कर देता है, शोक जीवन का सब कुछ नष्ट कर देता है, अतः शोक के समान जीवन में अन्य कोई शत्रु नहीं है।

मां जगदम्बे

तेरे सहारे है मेरा यह संसार

ये विशेष सिद्धि प्रयोग

मां कृपा अमृत फल

"मां" तो अपने भक्तों को अपने पुत्रों के समान ही प्यार, कृपा का अमृत फल देती है, पुत्र ही अपने गर्व में 'मां' से विमुख हो जांय और जीवन में दुःख प्राप्त करते रहें, तो इसमें 'मां' दुर्गा का क्या दोष ?

भगवती दुर्गा के अनुष्ठान सरल हैं, और निश्चित कार्य सिद्धि प्रदान करने वाले हैं, साधक इन मन्त्रों के पीछे की भावना को समझते हुए, समर्पित होकर अनुष्ठान सम्पन्न करें, तो जीवन धन्य हो जाता है।

कलियुग में गणेश और दुर्गा साधना ही महत्व-पूर्ण मानी गयी है, और यदि सही प्रकार से इन से सम्बन्धित अनुष्ठान सम्पन्न किये जांय, तो निश्चय ही तुरन्त कार्य सिद्धि होती है।

महायोगी स्वामी चंडीदास जी भगवती दुर्गा के अनन्य उपासक हैं, और मां जगदम्बा उनके सामने प्रत्यक्ष उपस्थित होकर भोजन ग्रहण करती हैं, मुझे इस महापुरुष से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, और मेरे द्वारा जिज्ञासा करने पर उन्होंने भगवती दुर्गा से सम्बन्धित कुछ गोपनीय रहस्य स्पष्ट किये थे, जिसके माध्यम से वर्तमान में दुःखी एवं संतप्त मानव अपनी समस्याओं से मुक्ति पाकर पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है।

शारदीय नवरात्रि से चैत्र नवरात्रि तक का समय "चैतन्य काल" कहा जाता है, यह समय शिव और शक्ति दोनों की साधना का है, ऐसे शिव-शक्ति समय में नीचे दिये गये प्रयोगों को सम्पन्न किया जाय, तो साधक को अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है।

इन प्रयोगों के लिए पांच सावधानियां अपेक्षित हैं—

१–इनमें से किसी भी साधना में सवा लाख मन्त्र जप होना आवश्यक है।

२–दिनों की संख्या निर्धारित नहीं है, पर फिर भी यदि यह मन्त्र जप या अनुष्ठान, ११ या

२१ दिनों में सम्पन्न हो जाय तो ज्यादा उचित रहता है।

३-साधना काल में ब्रह्मचर्य व्रत का पूर्ण पालन करें, और रात्रि को ही मन्त्र जप सम्पन्न करें।

४-मन्त्र जप के समय पीली धोती पहिनें, घी का दीपक लगावें और सम्बन्धित यन्त्र सामने रख कर उसकी तरफ दृष्टि रखते हुये, **स्फटिक माला** से मन्त्र जप सम्पन्न करें।

५-साधना काल में एक समय भोजन करें।

उपरोक्त सभी नियम सामान्य हैं, और सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी सम्बन्धित साधना सम्पन्न कर आश्चर्य-जनक परिणाम प्राप्त कर सकता है, इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है, रजस्वला समय में पांच दिनों तक स्त्रियां साधना या मन्त्र जप सम्पन्न न करें, इसके बाद पुनः मन्त्र जप प्रारम्भ कर सकती हैं, इससे अनुष्ठान अवधि खंडित नहीं होती है।

१-समस्त प्रकार की कार्य की सिद्धि के लिए

अपने सामने **'कार्य सिद्धि यन्त्र'** तथा **'सिंहवाहिनी दुर्गा चित्र'** (मन्त्रसिद्ध) स्थापित कर **'स्फटिक माला'** से निम्न मन्त्र का जप करें, और ग्यारह अथवा इक्कीस दिनों में सवा लाख मन्त्र जप करने पर मनोवांछित कार्य में निश्चय ही सिद्धि प्राप्त होती है, सवा लाख मन्त्र जप करने के बाद उस यन्त्र को अपनी भुजा पर बांध लें, तो निश्चय ही मन में चाही गई कार्य सिद्धि हो जाती है।

मन्त्र

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः।
सनः वर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुदुरीतात्यग्निः॥

२- अकाल मृत्यु निवारण के लिए

अपने सामने **अपमृत्युनिवारण यन्त्र** स्थापित कर उसको बराबर देखते हुए, निम्न मन्त्र का सवा लाख जप करने पर अकाल मृत्यु या मृत्यु भय समाप्त हो जाता है, और यदि मरणासन्न व्यक्ति के लिए भी यह प्रयोग सम्पन्न किया जाय, तो वह पुनः स्वस्थ हो कर उठ खड़ा होता है।

मन्त्र

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्याभिः स्वनेन च॥

मन्त्र जप करने के बाद सम्बन्धित यन्त्र मरणासन्न रोगी को या व्यक्ति को पहिना दिया जाय, तो निश्चय ही उसका मृत्यु भय समाप्त हो जाता है।

३-प्रत्येक साधना में पूर्ण सफलता प्राप्ति के लिए

यदि साधना में बार-बार असफलता प्राप्त हो रही हो, और बाधाएं आ रही हों तो साधना से पूर्व भगवती दुर्गा से अनुमति मांग कर निम्न मन्त्र का सवा लाख जप **"साधना सिद्धि यन्त्र"** के सामने सम्पन्न कर उस यन्त्र को अपनी भुजा पर बांध लें, और फिर साधना करें, तो उसे निश्चय ही साधना में सफलता प्राप्त होती है, और वह सिद्ध होने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है—

मन्त्र

शरणागतदीनार्त परित्राण परायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते॥

४-निर्विघ्नता से कार्य सिद्धि के लिए

शादी, विवाह, व्यापार या कोई भी कार्य निर्विघ्न सम्पन्न हो जाय, इसके लिए उस कार्य के प्रारम्भ से पूर्व यदि निम्न मन्त्र के सवा लाख मन्त्र जप **"कार्य सिद्धि यन्त्र"** के सामने सम्पन्न कर, घर का मुखिया अपने गले में धारण कर कार्य प्रारम्भ करे, तो उस कार्य में किसी प्रकार की बाधा नहीं आती है, और वह कार्य पूर्णता के साथ सम्पन्न हो जाता है।

मन्त्र

करोतु सा नः शुभ हेतुरीश्वरी ।
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ।।

५-मनचाहा पति प्राप्ति के लिए

कई कारणों से यदि लड़की का विवाह नहीं हो रहा हो, या सगाई-शादी में बाधाएं आ रही हों, अथवा मनोवांछित पति प्राप्त नहीं हो रहा हो, तो निम्न मन्त्र का जप **"कामदेव यन्त्र"** के सामने सम्पन्न कर उस यन्त्र को कन्या के गले में धारण करा दें, तो कुछ ही दिनों में उसे मनचाहा पति प्राप्त हो जाता है, उनकी तरफ से स्वीकृति मिल जाती है और शीघ्र ही कार्य सिद्धि हो जाती है ।

मन्त्र

एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः ।
सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः ।।

६- समस्त प्रकार के शत्रुओं को समाप्त करने के लिए

यदि शत्रु बढ़ गये हों और प्राणों का खतरा हो, अथवा व्यापार में बाधाएं पहुंचा रहे हों तो अपने सामने **"शत्रु स्तम्भन यन्त्र"** रख कर उस पर नजर रखते हुए निम्न मन्त्र का अनुष्ठान करें, तो निश्चय ही कार्य सिद्धि होती है और शत्रु समाप्त हो जाते हैं—

मन्त्र

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ।।

मन्त्र जप के बाद सम्बन्धित यन्त्र मंगलवार के दिन श्मशान में जाकर फेंक देना चाहिए, या जंगल में जाकर जमीन में गाड़ देना चाहिए, तो निश्चय ही वह मुकदमों में सफलता तथा शत्रुओं पर पूर्ण विजय प्राप्त करने में सफल हो पाता है ।

७-समस्त प्रकार के रोग शान्ति के लिए

यदि घर में रोग हो या कोई न कोई रोगी बना रहता हो, अथवा किसी पारिवारिक व्यक्ति को ऐसा रोग हो गया हो कि वह समाप्त ही नहीं हो रहा हो तो **"रोग मुक्ति यन्त्र"** सामने रख कर निम्न मन्त्र का जप अनुष्ठान के रूप में किया जाय, तो निश्चय ही वह रोग मुक्त हो जाता है ।

मन्त्र

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ।।

अनुष्ठान समाप्त होने के बाद वह यन्त्र या तो रोगी के गले में पहिना दे, या घर में किसी स्थान पर टांग दे, तो घर से रोग समाप्त हो जाता है, और व्यक्ति निरोग हो कर जीवन में पूर्ण सुख एवं आनन्द प्राप्त करने में सफल हो पाता है ।

ऊपर मैंने भगवती दुर्गा से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण प्रयोग दिये हैं, इनमें से प्रत्येक अनुष्ठान में सवा लाख जप करना चाहिए, सामने शुद्ध घी का दीपक व अगरबत्ती लगी रहनी चाहिए, आसन पीले रंग का सूती होना चाहिए, तथा साधक एक समय ही सात्विक भोजन ग्रहण करे, इस प्रकार नियमपूर्वक अनुष्ठान करने से निश्चय ही कार्य सिद्धि होती है ।

जहां भावना और आस्था प्रबल होती है, साधक की पुकार होती है, मन्त्र का अनुष्ठान होता है, वहां मां भगवती अपने सहस्र हाथों से कृपा के मोती बिखेर देती है । ●

यह भी साधना ही है!

साधक जब शिष्य में परिवर्तित हो जाता है, दीक्षा प्राप्त कर लेता है, तो वह एक नया रूप ग्रहण करता है, इस नये रूप के विस्तार की संभावनाएं अनन्त हैं, शिष्य सद्गुरु देव के अनन्त से जुड़कर **"अहोभाव"** की स्थिति में पहुंच जाता है, उसके कर्तव्यों में बहुत कुछ और भी जुड़ जाता है।

व्यक्तिगत उन्नति, व्यक्तिगत लाभ, पारिवारिक लाभ के लिए तो साधना अनुष्ठान सभी करते हैं, लेकिन सच्चा शिष्य इसके साथ और भी बहुत कुछ करता है।

यदि आप अपने आप को पूज्य गुरुदेव का शिष्य मानते हैं, तो आपके निम्न कार्य भी साधनात्मक कार्य हैं, जिनके पालन से गुरु के पास सशरीर उपस्थित न रहकर भी गुरुसेवा का लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

१-अपने क्षेत्र के सभी साधकों से नियमित संपर्क रखना उनसे अपना गुरु भाई होने के नाते परस्पर श्रेष्ठ विचारों का आदान-प्रदान करना।

२-जो साधक, शिष्य साधना के क्षेत्र में नये हैं, उन्हें साधनात्मक विवेचन का ज्ञान कराना, वीडियो या आडियो कैसेट प्रवचन द्वारा सुनाना।

३-**"नवार्ण-मन्त्र"** **"गुरु मन्त्र"** अथवा **"मयूरेश-स्तोत्र"** का अधिक से अधिक संख्या में सामूहिक जप करना अथवा करवाना।

४-गुरु अमृत वचनों का प्रचार करना, गुरु साहित्य का प्रचार करना, अपने दैनिक जीवन का एक हिस्सा बना लेना भी साधना है।

५-अपने क्षेत्र के सभी पत्रिका सदस्यों की सदस्यता का उचित समय पर नवीनीकरण कराना, किसी कारण वश पत्रिका न मिलने पर दूसरी पत्रिका का प्रबन्ध कराना भी गुरु सेवा, साधना है।

६-कुछ समर्पित शिष्य तो अपने क्षेत्र के समस्त सदस्यों की पत्रिकाएं एक साथ एक स्थान पर मंगवाकर उन्हें व्यक्तिगत रूप से क्षेत्र के सभी सदस्यों को वितरित करते हैं, जिससे डाक व्यवस्था में उनकी पत्रिका न खोये।

७-सप्ताह के किसी एक निश्चित दिन बारी-बारी एक शिष्य के यहां गुरु पूजन, सत्संग का आयोजन करना, और उसमें अपने धर्म प्रेमी मित्रों को आमन्त्रित करना भी तो साधना है।

८-प्रत्येक माह की २१ तारीख को क्षेत्र के अधिक से अधिक सदस्य एकत्रित होकर विशेष अनुष्ठान सामूहिक साधनाएं, गुरुमन्त्र जप का आयोजन करें, इसके लिए यदि प्रत्येक क्षेत्र में स्थाई **"निखिलेश्वर ध्यान साधना केन्द्र"** बने, तो अति सुन्दर है।

९-जो अपना प्रत्येक कार्य गुरु चरणों में ध्यान रखते हुए पूर्ण निष्ठा एवं कर्त्तव्य भाव से करते हैं, ऐसे शिष्य ही सच्चे शिष्य हैं, जो सेवा को परम धर्म मानते हैं।

सिद्ध से सिद्धतम

मेरा अनुभूत प्रयोग

तांत्रोक्त श्री वांछा कल्पलता सिद्धि

तन्त्र का उद्गम भगवान शिव के श्रीमुख से उत्पन्न अमृत वचन और उनके कार्य रूप का तत्व है, तन्त्र सम्पूर्ण विश्व की हर क्रिया-प्रक्रिया से सम्बन्ध अवश्य रखता है, ऐसे अपार तन्त्र सागर से पत्रिका साधकों के लिए एक अनमोल मोती—

तन्त्र का संसार विराट एवं अद्भुत है, यह ऐसा सागर है, जिसमें गोता लगाने वाले हर साधक को विशेष सूझ-बूझ से कार्य करना होता है, तन्त्र का तात्पर्य है वह विशेष प्रक्रिया जिसके सहयोगी मन्त्र और यन्त्र हों।

आपने पुस्तकीय ज्ञान से शुद्ध मन्त्र प्राप्त कर लिया, यन्त्र भी बना लिया, लेकिन यदि साधना प्रक्रिया में ही कोई दोष है, तो समझ लीजिये लाभ के स्थान पर हानि ही है, क्योंकि तन्त्र का सम्बन्ध केवल शरीर से ही नहीं अपितु मन, देह, प्राण, कुण्डलिनी सबसे होता है, ऐसी स्थिति में सद्गुरु अपने शिष्यों को विशेष प्रक्रिया का अर्थात् तन्त्र का ज्ञान कराते हैं, उसकी उंगली पकड़ कर मार्ग दिखाते हैं, जिससे जो उसके लिए सही है, वही करे, और तन्त्र प्रक्रिया में गलती से बचे, इस गुह्यतम शास्त्र में गृहस्थ व्यक्तियों के लिए वास्तव में बहुत कम प्रयोग हैं, क्योंकि गृहस्थ साधना के सभी नियमों का पूर्ण रूप से पालन नहीं करता, उसका अपनी चित्त वृत्तियों पर नियंत्रण नहीं रहता।

ऐसा ही एक दुर्लभ तांत्रोक्त प्रयोग है, "वांछा कल्पलता सिद्धि प्रयोग" जो केवल गृहस्थ साधकों के लिए उपयुक्त है, और अपनी इच्छाओं की पूर्ति हेतु अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए।

वांछा कल्पलता

'वांछा' शब्द का तात्पर्य है, मनुष्य की इच्छा, अभिलाषा, कामना और 'कल्पलता' शब्द का मतलब

है, कल्प वृक्ष जैसे महत्वपूर्ण दैवी वृक्ष से।

इसका तात्पर्य यह है, कि यह कल्पवृक्ष के समान, साधना करने वाले की सभी प्रकार की कामनाओं की पूर्ति करने की सामर्थ्य एवं शक्ति रखता है।

तांत्रिक ग्रन्थों में इसके बारे में बताया गया है—

वांछा कल्पलतायास्तु न होमो न च तर्पणम
स्मरणादेव सिद्धिः स्यात् यदिच्छति हि तद् भवेत्॥१॥
एकावृत्या वशे लक्ष्मीः पंचावृत्या वशं जगत्।
दशावृत्या तथा विष्णू रुद्र शक्तिर्भवेदिह॥२॥
सार्वभौमः शतावृत्या भवत्येव न संशय।

अर्थात्, "यह वांछा कल्पलता साधना विश्व की दुर्लभ साधना है, इसके प्रयोग में होम, या तर्पण करने की जरूरत नहीं होती, केवल इस मन्त्र के जप से ही साधक की प्रत्येक इच्छा पूरी हो जाती है, इस मन्त्र की एक आवृत्ति से लक्ष्मी प्राप्ति होती है, पांच आवृत्तियों से पूरा संसार वश में होता है, और दस आवृत्तियों से भगवान विष्णु और रुद्र की पूर्ण शक्ति प्राप्त होती है, इसी प्रकार यदि कोई साधक इसकी सौ आवृत्तियां कर ले, तो वह सारे संसार में सम्माननीय होता है, इसमें कोई दो राय नहीं।"

तन्त्र सार

तन्त्र सार ग्रन्थ में इस साधना के बारे कुछ महत्वपूर्ण तथ्य स्पष्ट किये गये हैं, उसके अनुसार—

१–यदि इस मन्त्र की केवल एक माला मन्त्र जप कर अर्थात् १०८ बार उच्चारण कर किसी से भी मिलने के लिए जायें, और कोई भी कार्य कहें, तो सामनें वाला तुरन्त कार्य कर देता है।

२–यदि इस मन्त्र की पांच माला मन्त्र जप कर किसी अधिकारी या बहुत बड़े व्यापारी के सामने जाकर अपनी इच्छा प्रगट करें, अथवा प्रमोशन, स्थानान्तरण या कोई एजेन्सी प्राप्त करने की बात कहें, तो वह निश्चय ही स्वीकार कर ली जाती है।

३–यदि शक्कर की बनी हुई किसी चीज (बतासा आदि) पर नाम लेकर मात्र ग्यारह माला मन्त्र जप कर वह चीज उसे खिला दें, तो निश्चय ही वह वश में हो जाता है (या हो जाती है), और जीवन भर वश में बनी रहती है, यह अनुभूत प्रयोग है और तुरन्त इसका प्रभाव होता है।

४-यदि इस मन्त्र की गुलाब के पुष्पों के सामने पांच माला मन्त्र जप कर वे गुलाब के पुष्प दुकान या फैक्टरी में बिखेर दें, तो दुकान पर किया गया तांत्रिक प्रयोग समाप्त हो जाता है, और व्यापार में आश्चर्यजनक वृद्धि होने लगती है।

५-यदि तांबे के गिलास में पानी भर कर इस मन्त्र का २१ बार उच्चारण कर वह पानी रोगी को पिला दिया जाय, तो वह रोग मुक्त हो जाता है, अथवा ऐसे पानी को बाल्टी में मिला कर स्नान कराया जाय, तो उसके शरीर का सारा रोग समाप्त हो जाता है।

६- यदि काली मिर्च के १०१ दानों पर नाम ले कर इस मन्त्र की १५ माला मन्त्र जप कर वे काली मिर्च के दाने शत्रु के घर में किसी प्रकार से फेंक दिये जायें तो घर के सभी सदस्य बीमार बने रहते हैं, लक्ष्मी का नाश हो जाता है, तथा घर में कलह-लड़ाई बढ़ जाती है, यदि इस काली मिर्च को दक्षिण दिशा में जाकर मंगलवार के दिन जमीन में गाड़ दें, तो शत्रु का मरण हो जाता है।

७- यदि इलायची के पांच दानों पर इस मन्त्र की एक माला मन्त्र जप कर इलायची के दाने

रजस्वला समय में स्त्री को तीन दिन तक खिलाये जांय, तो निश्चय ही उसके गर्भधारण होता है, और योग्य पुत्र रत्न पैदा होता है।

८- यदि वांछा कल्पलता यन्त्र के सामने तेल का दीपक लगा कर नित्य तीन माला मन्त्र ११ दिन तक जप करें, तो सभी प्रकार का राज्य भय समाप्त हो जाता है, और स्थितियां अनुकूल होने लगती हैं।

मैंने इस प्रयोग को कई स्थानों पर कई प्रकार से आजमाया है, और इस कलियुग में भी इसका प्रभाव देख कर दंग रह गया हूं, वास्तव में ही इसकी मन्त्र रचना में कोई विशेषता है, जिससे कि इसका उच्चारण करने से कार्य सिद्धि होने लगती है, मैंने तो अपने जीवन में यह नियम बना लिया है, कि नित्य प्रातः उठ कर केवल तीन बार इस मन्त्र का उच्चारण कर लेता हूं, तो वह पूरा दिन मेरे लिए अनुकूल बना रहता है, और कार्य में सफलता मिलती रहती है।

साधना विधि

इस प्रयोग को किसी भी दिन से प्रारम्भ किया जाना चाहिए, अपने सामने मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **"वांछा कल्पलता यन्त्र"** स्थापित कर देना चाहिए जो कि **"अथवर्ण सौभाग्य कांड"** से सिद्ध हो, आगे के सारे प्रयोग अथवा उपरोक्त सभी प्रयोग इस महत्वपूर्ण यन्त्र को सामने रख कर ही किये जा सकते हैं।

साधक चाहे तो इस यन्त्र में धागा पिरो कर उसे अपनी बांह पर बांध सकता है।

इस यन्त्र को किसी पात्र में या छोटा सा लाल कपड़ा बिछा कर उसके ऊपर स्थापित करें, और फिर मन्त्र जप प्रारम्भ करें, इसमें तेल का दीपक या घी का दीपक अथवा अगरबत्ती लगाना आवश्यक नहीं है, न तो इस साधना में किसी विशेष आसन का विधान है, और न किसी विशेष दिशा में बैठकर मन्त्र जप करने का निर्णय है, इस साधना में किसी भी माला का प्रयोग किया जा सकता है।

इस प्रकार से देखा जाय तो यह साधना अत्यन्त ही सरल और शीघ्र सिद्धिप्रद है।

ध्यान

श्रीविद्या ब्रह्म-विद्या च व्याप्तं ये सचराचरं।
निर्द्वन्द्वा नित्य-सन्तुष्टा निर्मोहा निरूपाधिका ॥
कामेश्वरी मनोऽभीष्ट-कामेश्वर-स्वरूपिणी।
नमस्तेऽनन्त-रूपायै प्रसीद सुप्रसीद मे ॥

मन्त्र

श्रीं श्रीं श्रीं, ह्रीं ह्रीं ह्रीं, क्लीं क्लीं क्लीं, ऐं ऐं ऐं, सौः सौः सौः, ॐ ॐ ॐ, ह्रीं ह्रीं ह्रीं, श्रीं श्रीं श्रीं, कं कं कं, एं एं एं, ईं ईं ईं, लं लं लं, ह्रीं ह्रीं ह्रीं, हं हं हं, सं सं सं, कं कं कं, हं हं हं, लं लं लं, ह्रीं ह्रीं ह्रीं, सं सं सं, कं कं कं, लं लं लं ह्रीं ह्रीं ह्रीं, सौः सौः सौः, ऐं ऐं ऐं, क्लीं क्लीं क्लीं, ह्रीं ह्रीं ह्रीं, श्रीं श्रीं श्रीं, प्रसीद प्रसीद, मम मनो ईप्सितं कुरु कुरु।

इस प्रकार साधक साधना प्रयोग कभी भी सम्पन्न कर सकता है, फिर भी साधना में एक क्रम अपना लें, तो उचित रहता है, एक माला, पांच माला, अथवा ग्यारह माला मन्त्र जप श्रेष्ठ रहता है, भगवान शिवकृत यह वांछा कल्पलता प्रयोग तो गृहस्थ के लिए वरदान स्वरूप ही है।

विशेष

पूज्य गुरुदेव के आदेशानुसार साधना के इच्छुक साधकों को यह वांछा कल्पलता यन्त्र उपहार स्वरूप प्रदान किया जा रहा है।

जिन पत्रिका सदस्यों ने अपना नवीनीकरण नहीं कराया है, वे अपना सदस्यता नवीनीकरण सन् ९२ के लिए करा कर यह विशेष उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

जिन सदस्यों ने नवीनीकरण करवा लिया है, वे इस यन्त्र के गुरु दक्षिणा के स्वरूप में एक और सदस्य बना कर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

इस हेतु नीचे लिखा प्रपत्र भर कर भेज दें, और आपको १२०) रु० + डाक खर्च की वी०पी० से "वांछा कल्पलता सिद्धि यन्त्र" भेज दिया जायेगा। ●

प्रपत्र

मैं पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रदत्त विशेष उपहार **"वांछा कल्पलता सिद्धि यन्त्र"** प्राप्त करना चाहता हूं, मैं १२०) रु० + डाक खर्च की वी०पी० छुड़ाने का वचन देता हूं। वी०पी० छूटते ही सन् १९९२ के लिए मेरी सदस्यता का नवीनीकरण कर दें या मेरे निम्न मित्र को सन् ९२ के लिए सदस्य बना दें, और पूरे वर्ष नियमित रूप से पत्रिका भेजते रहें।

१- मेरी सदस्यता संख्या....................

२- मेरा पूरा नाम..

३- मेरा पूरा पता..

....

१- मेरे मित्र का पूरा नाम..

२- मेरे मित्र का पूरा पता..

....

हस्ताक्षर

अपने आपमें अनन्त संभावनाओं को समेटे हुए

स्वरोदय विज्ञान

जिससे

हर क्षण प्रत्येक प्राणी प्रभावित है

इस गूढ़ व रहस्यमय विज्ञान को

अपने अनुकूल बनाकर

जीवन में

आश्चर्यजनक सफलता, श्रेष्ठता व दिव्यता प्राप्त की जा सकती है

योग और प्राणायाम का आधार मनुष्य द्वारा अपनी नाक से लिया गया श्वास एवं उसकी गति है, इसका सम्बन्ध पूरे शरीर की प्रत्येक क्रिया से है, इस विज्ञान के सम्बन्ध में प्रामाणिक जानकारी पहली बार—

हम प्रतिदिन अपने नथुनों से श्वास-प्रश्वास लेते हैं, यह बात साधारण प्रतीत होती है, क्योंकि यह क्रिया अपने आप चलती रहती है, ईश्वर द्वारा प्रदत्त यह उपहार मनुष्य के लिए सबसे बड़ा वरदान है, जो श्वास हम लेते हैं, उसी के द्वारा हृदय में रक्त का शुद्धिकरण सम्पन्न होता है, और रक्त शुद्धिकरण की प्रक्रिया से ही सारी क्रियाएं सम्पन्न होती हैं, शरीर के सारे अंग, अवयव स्वस्थ रहते हैं।

क्या आपने अपने श्वास के सम्बन्ध में कभी विशेष ध्यान दिया है ? विशेष घटनाओं के घटित होने के पहले तथा बाद में, किसी खतरे के पहले और बाद में, यह श्वास-प्रश्वास की गति बदल जाती है, शरीर के सभी सुख-दुःख, मानसिक कष्ट, रोग तथा सभी आपत्तियां, श्वास से प्रभावित होती हैं, संक्षेप में, शरीर रूपी रथ के संचालन के यही सूत्रधार हैं, श्वास-प्रश्वास को स्वर कहा गया है, और इससे सम्बन्धित ज्ञान को **स्वरोदय विज्ञान** कहा जाता है।

दिन-रात बिना रुके चलने वाले इस श्वास-प्रश्वास के कुछ विशेष नियम होते हैं, और यह आश्चर्य है, कि दोनों नासिकाओं से एक साथ श्वास-प्रश्वास नहीं चलता, यह अपनी एक निश्चित गति से, निश्चित समय पर एक नसकोरे से चलता है, और उसके बाद निश्चित समय पूरा होने पर दूसरे नसकोरे में चलने लगता है।

हमारे पाठक निश्चित रूप से यह प्रश्न उठाएंगे, कि जब यह गति अबाध रूप से चलती रहती है, तो फिर इसके बारे में जानकारी प्राप्त करने से क्या लाभ? किन्तु शरीर की प्रत्येक क्रिया-प्रतिक्रिया, रोग का ज्ञान इसके द्वारा किया जा सकता है, रोग को भगाया जा सकता है, और किस स्वर के चलने के समय कौन सा कार्य करना चाहिए तथा इसके द्वारा तो भविष्य तक का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

श्वास जानने की विधि

इसकी प्रक्रिया अत्यन्त सरल है, बांएं हाथ के नासिका भाग को वाम नासिका तथा दायें हाथ की दिशा वाली दक्षिण नासिका कही जाती है, पहले एक नासिका को उंगली से बन्द कर अथवा दबा कर दूसरे से दो-चार बार साधारण जोर से श्वास लें, फिर दूसरी ओर की नासिका दबा कर पहले वाले नसकोरे से श्वास लें, इस प्रकार जिस नसकोरे से श्वास लेते समय कुछ रुकावट सी प्रतीत होती हो, उस नासिका को बन्द और दूसरे को खुला समझें, इसका ज्ञान तो नाक के आगे उंगली रख कर भी किया जा सकता है, श्वास छोड़ते समय जिस नासिका रन्ध्र से तीव्र गति से हवा आये, उसे खुला समझना चाहिए।

इस प्रकार साधारण रूप में एक रन्ध्र से ढाई घड़ी अर्थात् एक घन्टे वाम स्वर चलता है, और फिर एक घण्टे दक्षिण स्वर चलता है।

स्वर और आयु का सम्बन्ध

साधारणतः मनुष्य प्रति मिनट १३ से १५ बार श्वास-प्रश्वास करता है, इस प्रकार एक दिन-रात में अर्थात् २४ घण्टे में यह संख्या लगभग २१,६०० तक पहुंचती है, यह संख्या प्रति मिनट जिस प्राणी की जितनी कम होगी उसकी आयु उतनी ही कम होती है, मनुष्य तो क्या अन्य प्राणियों की श्वास गति का तुलनात्मक अध्ययन कर उनकी आयु के बारे में जानकारी प्राप्त की जा सकती है, अतः श्वास-प्रश्वास की संख्या पर नियन्त्रण कर, इसे बढ़ा कर आयु बढ़ाई जा सकती है, और हमारे योग विज्ञान में जो प्राणायाम तथा श्वास खींचने और छोड़ने की प्रक्रिया की जाती है, वह सीधी शरीर के आयु से सम्बन्ध रखती है, और यह संभव है, इसीलिए भारतीय योग शास्त्र में पद्मासन पर बैठ कर सबसे पहले श्वास लेने और छोड़ने का नियम समझाया जाता है।

शरीर और पंच तत्व

शरीर में पांच तत्व विद्यमान होते हैं, प्रत्येक तत्व की एक निश्चित स्थिति और कार्य होता है—

१- पृथ्वी तत्व

इस तत्व का निवास **मूलाधार चक्र** में है और यह शरीर में गुदा के पास स्थित होता है, यहीं से सुषुम्ना नाड़ी प्रारम्भ होती है यह सभी स्थिर पदार्थों और गन्ध का स्वरूप है, शारीरिक कमजोरी नपुंसकता सम्बन्धी पीड़ाएं, भय इसी तत्व में विकार होने से उत्पन्न होता है।

२- जल तत्व

यह शरीर में **स्वाधिष्ठान चक्र** में स्थित होता है, यह चक्र पेट के नीचे तथा जननेन्द्रिय के मूल में स्थित है, और रस सम्बन्धी सभी कार्य इसी तत्व की वजह से होते हैं, इसकी ज्ञानेन्द्रिय जीभ और कर्मेन्द्रिय लिंग है।

३- अग्नि तत्व

इसका निवास **मणिपुर चक्र** अर्थात् नाभि में स्थित है, इसकी ज्ञानेन्द्रिय आंख और कर्मेन्द्रिय पैर है, क्रोध, सूजन, पेट का विकार इस तत्व में विकार उत्पन्न होने से होता है।

४- वायु तत्व

यह तत्व **अनाहत चक्र** अर्थात् हृदय प्रवेश में स्थित होता है, इसका गुण स्पर्श है, इसकी ज्ञानेन्द्रिय त्वचा तथा कर्मेन्द्रिय हाथ है, वायु, दमा इत्यादि से सम्बन्धित रोग इसी तत्व में विकार होने से पैदा होते हैं।

५- आकाश तत्व

इसका स्थान **विशुद्ध चक्र** अर्थात् कंठ (गले) में स्थित है, इसका गुण शब्द, ज्ञानेन्द्रिय कान तथा कर्मेन्द्रिय वाणी है।

प्राणायाम और साधना द्वारा साधक अपने शरीर के इन पंच तत्वों पर नियंत्रण कर सकता है, और इसके नियंत्रण से ही वह सिद्धि प्राप्त करने में सफल रहता है।

इसका कैसे ज्ञान हो, कि शरीर में इस समय कौन सा तत्व उदय हो रहा है, और उस समय क्या करना चाहिए, इसका नियम अत्यन्त सरल है, प्रत्येक तत्व के उदय होने के समय नासिका में चलते हुए श्वास की गति बदल जाती है, यदि नासिका के मध्य में श्वास चल रहा है तो पृथ्वी तत्व, नीचे की ओर चल रहा है तो जल तत्व, ऊपर की ओर चल रहा है, तो अग्नि तत्व, तिरछा अर्थात् एक ओर चल रहा है तो वायु तत्व का, एवं यदि घूम-घूम कर भंवर की तरह चल रहा है तो आकाश तत्व का उदय समझना चाहिए।

यदि मुंह में मीठा (मधुर) स्वाद जान पड़े तो पृथ्वी तत्व, कसेला स्वाद जान पड़े तो जल तत्व, कड़वा स्वाद जान पड़े तो अग्नि तत्व, खट्टा स्वाद तो वायु तत्व और तीखा जान पड़े तो आकाश तत्व की उपस्थिति समझनी चाहिए, इस प्रकार श्वास अर्थात् स्वर और इन तत्वों का आपस में गहरा सम्बन्ध है, आप अपने अनुभव से जान सकते हैं, जब कोई विशेष कार्य करते हैं तो उस समय शरीर में अमुक स्वर और अमुक तत्व ही चलता है, अब प्रश्न उठता है कि तत्व की उपस्थिति का ज्ञान तो हो गया, लेकिन नासिका में चलने वाले स्वर को कैसे बदला जाय, जिससे इन दोनों के सम्बन्ध से कार्य निश्चित रूप से कार्य सिद्ध हो, इसकी विधि अत्यन्त सरल है, किसी विशेष प्रयोजनवश जिस नासिका का श्वासोच्छ्वास बदलना हो, तो उसी ओर करवट से लेटें, थोड़ी देर में स्वर बदल जायेगा, **अर्थात् वाम नासिका से श्वास चलाना हो तो दक्षिण करवट से लेटना चाहिये, और दक्षिण नासिका से श्वास चलाना हो तो बांयें करवट से लेटना चाहिए।**

आगे तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा रहा है, कि किस कार्य की सफलता हेतु कौन सा स्वर चलना चाहिए, कौन सा तत्व जागृत रहना चाहिए और किस दिन यह कार्य करना चाहिए, साधारण नियम यह है कि तमाम स्थिर और अच्छे कार्य पृथ्वी और जल तत्व की उपस्थिति में करने चाहिए—

कार्य का नाम	स्वर का नाम	तत्व का नाम	वार
१-शान्तिकर्म	वाम स्वर	पृथ्वी, जल या दोनों	सोम, बुध, गुरु या शुक्र
२-पौष्टिक कर्म	,,	,,	,,
३-मैत्रीकरण	,,	,,	,,
४-विवाह	,,	,,	,,
५-मकान बनवाना	,,	,,	,,
६-यज्ञ	,,	,,	,,
७-बन्धु, बान्धव मित्रादि से मिलना	,,	,,	,,
८-दूरगमन यदि दक्षिण या पश्चिम दिशा में जाना हो तो	,,	,,	,,
९-कठिन और क्रूर क्रिया	दक्षिण स्वर	,,	मंगल, शनि या रवि

१०-व्यायाम	,,	,,	,,
११-विषय-भोग	,,	,,	,,
१२-विवाद	,,	,,	,,
१३-किसी के समीप जाना	,,	,,	,,

शरीर को स्वस्थ रखने के लिए स्वरोदय विज्ञान का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है, आगे कुछ रोग और उनका उपचार स्पष्ट किया जा रहा है, उसके अनुसार स्वर साधने से रोग दूर हो जाता है।

१- बुखार

जब बुखार प्रारम्भ हो, उस समय नासिका में जो स्वर चल रहा है, उस नसकोरे को रुई द्वारा बन्द कर दूसरे नसकोरे से श्वास लेना चाहिए, बुखार शीघ्र दूर हो जाता है।

२- सिर दर्द

सिर दर्द प्रारम्भ होते ही सीधा लेट कर दोनों हाथ नीचे की ओर लम्बे फैला दें, फिर दोनों हाथ की कोहनियां रस्सी से जोर से बन्धवा दें, थोड़ी देर में ही सिर दर्द दूर हो जाता है, दर्द समाप्त होते ही रस्सी खोल दें।

३- अजीर्ण या बदहजमी

सबसे पहले तो ऐसे व्यक्तियों को जब दक्षिण स्वर चल रहा हो, उस समय भोजन करना चाहिए, तथा भोजन के पश्चात् पन्द्रह बीस मिनट बांयी करवट लेटना चाहिए, इसके अतिरिक्त प्रतिदिन दस-पन्द्रह मिनट पद्मासन में बैठ कर नाभि पर दृष्टि स्थिर रखने से अपच की शिकायत दूर हो जाती है।

४- अन्य दर्द

छाती, पीठ, कमर, पेट अथवा कहीं भी अचानक दर्द उठने पर जो स्वर चल रहा हो, उसे तुरन्त पूर्ण रूप से बन्द कर देने से दर्द पूर्णतया शान्त हो जाता है।

५- दमा

जब दमा का दौरा प्रारम्भ हो और सांस फूलने लगे, तो जो स्वर चल रहा हो उसे बन्द कर दें, दूसरा स्वर १५-२० मिनिट चलने पर आराम आ जाता है, प्रतिदिन एक मास तक दिन भर अभ्यास के समय बार-बार स्वर को बदलने से पुराने से पुराना दमा दूर हो जाता है।

परिश्रम से उत्पन्न हुई थकावट को दूर करने के लिए या धूप की गर्मी से शान्त होने के लिए थोड़ी देर तक दाहिनी करवट लेटने से थकावट या गर्मी दूर हो जाती है।

सवेरे आंख खुलते ही जिस ओर का स्वर चल रहा हो, उस ओर की हथेली मुख पर रख कर उसी ओर का पैर पहले जमीन पर रखने से इच्छा सिद्धि होती है।

यदि व्यक्ति इच्छानुसार स्वर बदलने का अभ्यास करता रहे, और जब भी समय मिले, तब जो स्वर चल रहा हो, उसे फौरन बदल दे, यह क्रिया दिन में कई बार सम्पन्न करे, तो यौवन सम्बन्धी लाभ विशेष रूप से प्राप्त होता है।

प्राणायाम द्वारा धीरे-धीरे श्वास लेना, और धीरे-धीरे छोड़ने का अभ्यास प्रतिदिन प्रातः अवश्य करना चाहिए, इससे शरीर स्वस्थ एवं निरोगी रहता है।

स्वरोदय विज्ञान के सम्बन्ध में यह विवरण तो अत्यन्त संक्षिप्त है, इस विज्ञान में अथाह संभावनाएं, हैं, क्योंकि शरीर की प्रत्येक क्रिया-प्रतिक्रिया, गति, चिन्तन स्वरोदय से जुड़ा है, जो पाठक किसी विशेष प्रश्न के सम्बन्ध में जानना चाहें, अथवा कुछ समझना चाहें, तो निश्चय ही पत्र लिख कर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। ●

अपनों से अपनी बात

प्रिय साधक बन्धुओं,

दीपावली लक्ष्मी पर्व की शुभ कामनाएं !

पत्रिका परिवार के लिए सन् ९१ का वर्ष विशेष उपलब्धियों का निर्णायक वर्ष रहा है, पिछले दस वर्षों से जो गति हमारे कार्यों में प्रवाहित हो रही थी, उसमें निश्चय ही वृद्धि हुई है।

पूज्य गुरुदेव द्वारा संचारित **निखिल ज्योति रथ** भारत भ्रमण पर निकला, और स्थान-स्थान पर जो स्वागत कार्यक्रम हुए, ज्योति पूजन हुआ, वह हमारे इस पत्रिका परिवार के प्रत्येक कड़ी की एकता तथा समर्पण को स्पष्ट करता है।

अभी यह ऐतिहासिक निखिल ज्योति दिव्य रथ उत्तर भारत, गुजरात के कुछ भाग, मध्य प्रदेश की साधना यात्रा कर पाया है, साधकों के उत्साह के कारण जहां एक दिन का कार्यक्रम निश्चित किया, वहां तीन-तीन दिन रुकना पड़ा।

साधना यात्रा का यह क्रम अनवरत चलता रहेगा, और पूज्य गुरुदेव की इच्छा है कि पूरे भारत-वर्ष में प्रत्येक सदस्य के यहां एक बार साधना, पूजन अवश्य सम्पन्न हो, और विश्वास है कि यह संभव हो सकेगा।

साधना शिविर

साधक और शिष्य अपने स्थान पर पूज्य गुरुदेव को बुलाने के लिए इतने आतुर रहते हैं, कि यह निर्णय करना कठिन हो जाता है, कि कहां कार्यक्रम रखा जाय, हर शिष्य की यह इच्छा होनी तो स्वाभाविक है, कि पूज्य गुरुदेव उसके शहर एक बार अवश्य पधारें।

पूज्य गुरुदेव के स्वास्थ्य को देखते हुए हम बार-बार रोकने का प्रयास करते हैं, लेकिन हमारा यह प्रयास निष्फल जाता है, और पूज्य गुरुदेव अपने शिष्यों के बीच पहुंच ही जाते हैं, चाहे यात्रा में, प्रवास में उन्हें कितना ही आंतरिक कष्ट हो, हर स्थान पर सभी शिष्यों से मिलने में ही उन्हें प्रसन्नता अनुभव होती है।

फरवरी में अपने शिष्यों के बीच **काण्ठमाडू** (नेपाल), मार्च में **सूरज कुंड** (दिल्ली), फिर **गुरुधाम** में नवरात्रि पर्व, अप्रैल में **नारगोल** (गुजरात) में चेतना शिबिर, २१ अप्रैल को **जोधपुर** में पूज्य गुरुदेव के जन्म दिवस का अमृत महोत्सव, मई में हिमालय की वादियों के बीच **कांगड़ा** में साधना शिविर, और आगे **बेंगलार** में गुरु पूर्णिमा आयोजन आप शिष्यों, साधकों के सहयोग से पूर्ण सफल हुए, हर शिष्य, साधक पूज्य गुरुदेव से व्यक्तिगत तौर पर मिल पाया, फिर भी इतने कष्ट साध्य परिश्रम के बाद हर समय उनके चेहरे पर मधुर मुस्कान ही खिलती रही।

आगे भी गुरुदेव आपके यहां बार-बार अवश्य आएंगे, योजनाएं तो आपको बनानी हैं, पूज्य गुरुदेव को आमन्त्रित करना है।

सदस्यता नवीनीकरण

इस वर्ष अधिकतर सदस्यों ने सन् ९२ के लिए अपनी सदस्यता का नवीनीकरण करा लिया है, यह प्रसन्नता का विषय है, कि अधिकतर पाठकों ने अपनी सदस्यता पंचवर्षीय करवा ली है, अथवा आजीवन सदस्यता ही ग्रहण कर ली है, जिससे हर वर्ष नवीनीकरण के झंझट से बच सकें।

यदि आपने ऐसा अब तक नहीं किया है, तो शीघ्र ही यह शुभ कार्य सम्पन्न कर लें।

पत्रिका के इस वर्ष के कुछ अंकों में पूज्य गुरुदेव ने अपनी कृपा के अमृत फल रूपी कुछ उपहार शिष्यों को दिये थे, जिसमें विशेष उपहार प्राप्त कर अपने मित्र को सदस्य बनाना था, और अब यह लिखते हुए प्रसन्नता हो रही है कि इस योजना का आयाम और अधिक बढ़ा दिया गया है।

केवल आपके लिए !

पत्रिका के वर्ष ९१ के अब तक के प्रकाशित अंकों में जो नवीनीकरण, नया सदस्य या अन्य उपहार योजना से सम्बन्धित किसी भी यन्त्र के सम्बन्ध में हमें लिख दें, आपको वह उपहार १२०)रु० + डाक खर्च की वी०पी० से भेज दिया जायेगा, और सन् ९२ के लिए आपकी सदस्यता का नवीनीकरण कर दिया जायेगा।

आप नीचे लिखा प्रपत्र भर कर भेज दें, और यह कार्य २५ दिसम्बर तक अवश्य सम्पन्न कर दें, जिससे जनवरी ९२ का विशेषांक आपको समय पर भेजा जा सके।

सदस्यता नवीनीकरण उपहार योजना प्रपत्र

सम्पादक जी,

मैं पत्रिका का सन् १९९१ के लिए सदस्य हूं और सन् ९२ के लिए सदस्यता नवीनीकरण कराना चाहता हूं, आप मुझे १२०)रु० + डाक खर्च की वी०पी० से निम्न उपहार यन्त्र भेज दें, वी०पी० छूटते ही मेरी सदस्यता का नवीनीकरण कर १२०)रु० सदस्यता शुल्क की रसीद भेज दें, तथा सन् १९९२ में भी पूरे वर्ष नियमित रूप से पत्रिकाएं भेजते रहें।

उपहार यन्त्र का नाम..

मेरी सदस्यता संख्या..

मेरा पूरा नाम..

मेरा पूरा पता..

....

हस्ताक्षर

वर्ष १९९१ की

अमूल्य, अनोखी भेंट आप सब के लिए

गुरु साधना शिविर और १०८ कुण्डीय यज्ञ

(दिनांक १३-१२-९१ से १५-१२-९१ तक)

गुरुहीनः पशुः कीटः पतंगो वक्तुमर्हति ।
शिवरूपं स्वरूपं च न जानाति यतस्वयम् ।।

गुरु दीक्षा से रहित मनुष्य पशु, कीट एवं पतंग के समान अज्ञ माना जाता है, क्योंकि गुरु के बिना कोई भी व्यक्ति शिवत्व तथा आत्म तत्व को जान ही नहीं सकता ।

महाराष्ट्र में सह्याद्रि पर्वत माला की गोद में स्थित हिल स्टेशन **माथेरान** में देव दुर्लभ, अलौकिक, अवर्णनीय गुरु साधना शिविर, पूज्य गुरुदेव के पावन निर्देशन में आयोजित है ।

परमपूज्य गुरुदेव स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी (डा० नारायणदत्त श्रीमाली) की उपस्थिति में हमें यह सौभाग्य प्राप्त हो रहा है, आप सभी गुरुभाई-बहनों को इस "गुरु साधना शिविर" में अवश्य भाग लेना है, और इस शुभावसर को प्राप्त करना ही है ।

इस वर्ष के अन्तिम चरण में आपको एक अत्यन्त पावन, सौभाग्य प्रदायक अवसर प्राप्त हो रहा है कि जीवन में पूर्णत्व प्राप्ति के पथ पर अग्रसर हो सकें ।

आप शान्त और सुव्यवस्थित वातावरण में साधना कर सकें, इसके लिए अग्रिम आरक्षण आवश्यक है, शिविर **सहयोग राशि ६६०) रुपये** प्रति व्यक्ति है, जिसमें दीक्षा, यज्ञ में भाग ले सकेंगे और पूर्णाहुति पैकेट प्राप्त कर सकेंगे, और इसी राशि में आप के द्वारा मनोनीत व्यक्तियों को पत्रिका सदस्यता प्रदान कर दी जायेगी ।

भोजन, आवास निःशुल्क है, शिविर में नाम पंजीकरण की अन्तिम तिथि ३०-११-१९९१ है, अपने साथ दो पीली धोती, एक मीटर पीला कपड़ा तथा ताम्र पंचपात्र, कम्बल, गर्म कपड़े लायें ।

शिविर स्थल—श्री निखिल धाम द्वारा होटल बाम्बे व्यू, कटिंग रोड, माथेरान (महाराष्ट्र) ।

साधक भाई-बहनों को १२-१२-९१ तक माथेरान पहुंचना है, दक्कन एक्सप्रेस बाम्बे वी०टी० स्टेशन से प्रातःकाल ६.४५ पर और कोयना एक्सप्रेस प्रातः ८.४५ पर और करजत लोकल दोपहर दिन १.३० पर रवाना होती है, आप सभी नेरल स्टेशन पर उतरें और वहां से छोटी गाड़ी माथेरान के लिए प्रातः ८.४५ और दिन ११.०० बजे और सायंकाल ५.०० बजे रवाना होती है, नेरल से माथेरान के लिए टैक्सी भी उपलब्ध है, आरक्षण के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें ।

श्री केतन पंड्या / श्री गणेश भाई वटाणी
विष्णु भुवन, रानाडे रोड,
दादर वेस्ट, बम्बई-२८

फोन नं० : (सायं ५-६)-४३७९११०
६४९१९३३, ६०५७११०

सामग्री, जो आपकी साधनाओं में सहायक हैं

साधना प्रयोग	पृष्ठ संख्या	सामग्री नाम	न्यौछावर
पारद माला	५	त्रैलोक्य विजय पारद माला	८००)रु०
वशीकरण सिद्धि	६	वज्रधात्रीश्वरी वोधि यन्त्र	१५०)रु०
		तीन वज्रयान सम्यक्	६०)रु०
		चिदानन्द रूपात्मक सिद्धि माला	१२०)रु०
बगलामुखी साधना	१३	बगलामुखी यन्त्र	२४०)रु०
		१६ बगलामुखी शक्ति चक्र	६०)रु०
		पीताम्बरा शक्ति माला	९०)रु०
वेदोक्त विशिष्ट विद्याएं	१७	—	—
१-दहर विद्या	१८	गुरु चक्र	५१)रु०
		दहर चक्र	५१)रु०
२-दीर्घायुष्य विद्या		सर्वाभीष्ट विनियुक्त	२१०)रु०
		आरोग्य माला	३०)रु०
३-मन्थ विद्या	१९	मन्थाख्या मूर्ति	१०५)रु०
		कुशकण्डिका क्रियात्मा	७५)रु०
ग्रह बाधा निवारण अनुष्ठान	२१	नवग्रह कवच यन्त्र	१५०)रु०
विशेष सिद्धि प्रयोग	२५	—	—
१-समस्त प्रकार के कार्य सिद्धि के लिए	२६	कार्य सिद्धि यन्त्र	६०)रु०
		सिंहवाहिनी दुर्गा चित्र	१०)रु०
		स्फटिक माला	८०)रु०
२-अकाल मृत्यु निवारण के लिए	,,	अपमृत्यु निवारण यन्त्र	१०१)रु०
३-प्रत्येक साधना में पूर्ण सफलता हेतु	,,	साधना सिद्धि यन्त्र	८०)रु०
४-निर्विघ्नता से कार्य सिद्धि हेतु	,,	कार्य सिद्धि यन्त्र	८५)रु०
५-मनचाहा पति प्राप्ति हेतु	२७	कामदेव यन्त्र	१०५)रु०
६-समस्त प्रकार के शत्रु समाप्ति हेतु	,,	शत्रु स्तम्भन यन्त्र	९०)रु०
७-समस्त प्रकार के रोग शान्ति हेतु	,,	रोग मुक्ति यन्त्र	६०)रु०
श्री वांछा कल्पलता सिद्धि	२९	वांछा कल्पलता यन्त्र	९२ के लिए नवीनीकरण

* देह सिद्धि गुटिका
* गुरु रहस्य सिद्धि माला
* मृगाक्षी अप्सरा यन्त्र
* चन्द्रहिया यन्त्र
* मुरादी यन्त्र
* पुष्पदेहा अप्सरा
* स्वर्ण रेखा यन्त्र
* महात्रिपुर सुन्दरी यन्त्र
* कामदेव रति यन्त्र
* ललिताम्बा यन्त्र

ऊपर दिये गये यन्त्र पूज्य गुरुदेव के करकमलों से अभिमन्त्रित कर पूज्य गुरुदेव के हस्ताक्षरों से युक्त आशीर्वाद प्रपत्र के साथ शिष्यों को भेजा जायेगा, आप इनमें से किसी एक का चुनाव कर लें।

विशेष बात

यह उपहार आपको १२०)रु०+डाक खर्च की वी०पी० से भेजा जायेगा, और वी०पी० छूटते ही सन् १६६२ के लिए आपकी सदस्यता का नवीनीकरण कर दिया जायेगा, अतः आपको सदस्यता नवीनीकरण हेतु अलग से कोई धनराशि नहीं भेजनी है, नीचे लिखा प्रपत्र एक अलग साफ कागज पर उतार कर भेज दें, और दिसम्बर में अपना उपहार एवं पूज्य गुरुदेव का आशीर्वाद पत्र प्राप्त कर लें।

जो साधक वर्ष ६२ का नवीनीकरण करा चुके हैं, वे किसी मित्र या सम्बन्धी को पत्रिका सदस्य बना कर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

प्रपत्र

ऊपर दिये गये विवरण के अनुसार मैं पूज्य गुरुदेव का शिष्य एवं पत्रिका सदस्य होने के नाते इस उपहार को प्राप्त करने का अधिकारी हूं, और ऊपर दिये गये उपहार सूची के अन्तर्गत मुझे निम्न उपहार यन्त्र, जो पूज्य गुरुदेव के करकमलों से सिद्ध हो, मुझे तत्काल १२०)रु० + डाक खर्च की वी०पी० से भेज दें, और मेरी सदस्यता का नवीनीकरण वर्ष ६२ के लिए कर दें, पूज्य गुरुदेव मेरा कल्याण करें, और अपनी कृपा प्रदान करें।

उपहार यन्त्र का नाम ....

मेरी सदस्यता संख्या ....

मेरा पूरा नाम ....

मेरा पूरा पता ....

....

हस्ताक्षर